हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार 26 जुलाई 2026

11 200 मीटर दौड़ में अक्षय, 600 मीटर में मयंक जीता

12 सम्मान से मनाया कारगिल विजय दिवस

खबर संक्षेप

एसआईआर को लेकर कल होगा चुनाव अधिकारियों का प्रशिक्षण

झज्जर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में मतदाता सूचियों के एसआईआर कार्यक्रम को प्रभावी एवं पारदर्शी ढंग से संचालित करने के लिए 27 जुलाई को चुनाव अधिकारियों का विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 27 जुलाई को दोपहर दो बजे से सायं चार बजे तक लघु सचिवालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित होगा। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण में जिला के सभी निर्वाचक पंजीयन अधिकारी तथा सहायक निर्वाचक पंजीयन अधिकारी भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण में सभी चिन्हित अधिकारियों की उपस्थिति बेहद अनिवार्य है।

अंत्योदय परिवार उत्थान मेला बादली में आज

बादली/बहादुरगढ़। बादली स्थित बीडीपीओ कार्यालय परिसर में रविवार को मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान मेले का आयोजन किया जा रहा है। मेले में पात्र परिवारों को विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जाएगा। एडीसी जगनिवास ने बताया कि मेले में 19 विभागों के स्टॉल लगेंगे। पात्र परिवारों को स्वरोजगार, कौशल विकास, ऋण, डेयरी, पशुपालन, महिला उद्यमिता, प्रशिक्षण, मधुमक्खी पालन, मशरूम खेती, मत्स्य पालन, रेडक्रास, सीएससी, रोजगार सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ दिया जाएगा।

स्थापना दिवस पर मेधावी बच्चों का करेंगे सम्मान

बहादुरगढ़। सांखोल की संघर्षशील जनकल्याण सेवा समिति द्वारा रविवार को 11वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर मेधावी बच्चों को भारत भाग्य विधाता पुरस्कार दिया जाएगा। सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले पहली से बारहवीं कक्षा में टॉप थ्री में जगह बनाने वाले बच्चों को सम्मान दिया जाएगा। गोल मार्केट स्थित बुक बैंक में यह कार्यक्रम चलेगा। वहीं, शहीद कैप्टन कुलदीप सिंह स्मारक स्थल पर तिरंगा फहराया जाएगा और तालाब किनारे पौधरोपण होगा।

कछुए की चाल से भी धीमा एचएसवीपी का काम : सेक्टर 9 निवासी अतिरिक्त भुगतान के बावजूद पार्कों की सुविधा से वंचित

सेक्टर 9 में बनाने थे 12 पार्क, 15 वर्ष में एक भी नहीं बना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शहर के सेक्टर-9 में 15 वर्षों बाद भी प्रस्तावित पार्कों में से एक पार्क को भी विकसित नहीं किया जा सका है, जिसके कारण सेक्टरवासियों में रोष है। सेक्टरवासी ग्रीन बेल्ट और पार्क जैसी मूल सुविधा की इस अनदेखी की शिकायत डीसी दरबार में भी लगा चुके हैं, लेकिन कोई समाधान नहीं हुआ। रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों का कहना है कि वर्ष 2011 में सेक्टर का ड्रॉ होने के बावजूद आज तक यहां एक भी पार्क और ग्रीन बेल्ट विकसित नहीं की गई है। इससे यहां के निवासी वर्षों से स्वच्छ एवं हरित वातावरण जैसी बुनियादी सुविधा से वंचित हैं। सेक्टर में करीब 12 पार्क निर्धारित हैं, लेकिन किसी का भी विकास नहीं हुआ। यहां रहने वाले लोगों का कहना है कि जिन मकानों के सामने पार्क और ग्रीन बेल्ट प्रस्तावित हैं, उनसे अतिरिक्त 10 प्रतिशत राशि भी वसूली गई थी। बावजूद इसके सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई गईं। पार्क विकसित नहीं होने के कारण बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं को सुबह-शाम टहलने तथा अन्य गतिविधियों के लिए आसपास की कॉलोनियों के पार्कों में जाना पड़ता है। आरडब्ल्यूए का कहना है कि इस संबंध में वे संबंधित विभाग को कई बार लिखित शिकायतें दे चुके हैं। कई बार अधिकारियों ने जल्द पार्क निर्माण कार्य शुरू कराने का आश्वासन भी दिया, लेकिन धरातल पर अभी तक कोई काम शुरू नहीं कराया गया।

सिटी पल्स

झज्जर। सेक्टर-9 में प्रस्तावित पार्क की जमीन पर उगी झाड़ियां।

आंदोलन करने पर होंगे मजबूर : जाखड़

आरडब्ल्यूए प्रधान सोमवीर जाखड़ ने कहा कि सेक्टर के लोगों ने सरकार और विभाग के सभी नियमों का पालन करते हुए प्लॉट लिए तथा अतिरिक्त शुल्क भी जमा कराया, लेकिन बदले में आज तक मूलभूत सुविधाएं नहीं मिलीं। उन्होंने कहा कि यदि अब भी निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ तो सेक्टरवासी लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

पार्क की बजाय केवल आश्वासन : सतीश कुमार

आरडब्ल्यूए के ज्वाइंट सेक्रेटरी सतीश कुमार ने कहा कि पार्क और ग्रीन बेल्ट किसी भी सेक्टर की आवश्यक सुविधा होती है। बच्चों के खेलने और बुजुर्गों के टहलने के लिए सेक्टर में कोई स्थान नहीं है। कई वर्षों से केवल उन्हें आश्वासन ही मिल रहे हैं, जबकि अब काम शुरू होना चाहिए। पार्क विकसित करने के लिए आजकल मौसम भी उपयुक्त है।

प्रशासन से ठोस कार्रवाई की उम्मीद : रामकिशन

सेक्टर निवासी रामकिशन ने कहा कि सेक्टर के लोग लंबे समय से इस समस्या को झेल रहे हैं। उन्होंने कहा कि डीसी के खुले दरबार में शिकायत इसलिए दी गई थी ताकि प्रशासन इस मामले को गंभीरता से लेकर जल्द समाधान सुनिश्चित करे। सेक्टरवासियों को उम्मीद है कि इस बार प्रशासन ठोस कार्रवाई करेगा और पार्कों के निर्माण का कार्य शीघ्र शुरू होगा।

डीसी से की जल्द कार्रवाई की मांग

सेक्टरवासियों के अनुसारउन्होंने बीते वर्ष अक्टूबर माह में डीसी के खुले दरबार में पार्क विकसित करने की मांग को लेकर शिकायत लगाई थी, जिसके बाद उन्होंने संबंधित विभाग को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जब करीब पांच माह बीतने के बाद भी कोई सकारात्मक कार्रवाई नहीं हुई तो वे मार्च माह में फिर से डीसी के दरबार में पहुंचे। सेक्टरवासियों के अनुसार उन बातों को भी अब तीन माह बीत चुके हैं लेकिन अभी तक उनका पार्क का सपना अधूरा है।

टेंडर अलॉटमेंट का इंतजार

हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के सब डिविजन इंजीनियर हॉर्टिकल्चर विंग के एसडीओ देवेंद्र सिंह ने बताया कि सेक्टर में पार्क व ग्रीन बेल्ट स्थापित करने की प्रक्रिया सुचारू रूप से चल रही है। सेक्टर-9 के पार्ट वन एंड टू के पार्कों के लिए टेंडर लगाए जा चुके हैं। पिछले करीब दस दिनों से पोर्टल बाधित है। ऐसे में टेंडर अलॉटमेंट नहीं आई थी। जैसे ही टेंडर अलॉटमेंट आएगी, पार्कों को विकसित करने का कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

बहादुरगढ़ रोड पर बाजितपुर मोड़ के पास कार व पिकअप की टक्कर

एयरफोर्स में ज्वाइनिंग कर भरनी थी उड़ान सड़क हादसे ने छीनी दो दोस्तों की जान

- भदानी निवासी मृतक मुकुल व घायल दीपक का एयरफोर्स में चयन हो चुका था
- भदानी के ही 17 वर्षीय निशांत सागर ने हादसे में जान गंवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

क्षेत्र के बहादुरगढ़ रोड पर बाजितपुर मोड़ के नजदीक एक तेज रफ्तार पिकअप गाड़ी ने कार को पीछे से टक्कर मार दी। जिसके कारण कार सवार दो युवा दोस्तों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गया। मृतकों की पहचान जिले के भदानी गांव निवासी करीब 17 वर्षीय निशांत सागर पुत्र अनिल कुमार तथा करीब 24 वर्षीय मुकुल पुत्र जितेंद्र के तौर पर हुई है। उनका दोस्त दीपक पुत्र सुखबीर घायल है। बताया जा रहा है कि दीपक और मुकुल का चयन एयरफोर्स में भी हो चुका था। उनकी आगामी दिनों में ज्वाइनिंग होनी थी। लेकिन मुकुल अपने सपनों की उड़ान नहीं भर सका। जानकारी के अनुसार, भदानी निवासी निशांत सागर, मुकुल व दीपक कार में किसी कार्य से शहर आ रहे थे। जब उनकी कार बाजितपुर मोड़ के नजदीक पहुंची तो उनकी कार को एक तेज रफ्तार पिकअप गाड़ी ने टक्कर मार दी। टक्कर लगने से कार सड़क किनारे संतर में उतरकर एक दीवार से जा टकराई। हादसे के बाद कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और कार सवार तीनों युवा उसमें फंस गए। बाद में राहगीरों की मदद से बड़ी मशक्कत के बाद कार में फंसे युवाओं को खिड़कियां तोड़कर बाहर निकालते हुए उन्हें उपचार के लिए शहर के निजी अस्पताल लाया गया। यहां चिकित्सकों ने निशांत सागर को मृत घोषित कर दिया। गंभीर रूप से घायल मुकुल को प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों द्वारा रोहतक पीजीआई रेफर किया गया। रोहतक पीजीआई जाते समय मुकुल ने भी दम तोड़ दिया। दीपक अस्पताल में उपचाराधीन है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने अस्पताल पहुंच कर मृतक निशांत के शव को पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल के शव गृह भिजवाया। मामले के जांच अधिकारी रविंद्र कुमार ने बताया कि मृतक निशांत सागर के पिता अनिल कुमार की शिकायत पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस द्वारा इस संबंध में नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है। पुलिस को दी शिकायत में मृतक निशांत सागर के पिता अनिल कुमार ने बताया कि उसका पुत्र निशांत सागर गांव के ही अपने दोस्त मुकुल व दीपक के साथ उनकी गाड़ी लेकर घर से निकले थे। इसके बाद उन्हें एक्सीडेंट की सूचना मिली।

क्षतिग्रस्त कार व निशांत व मुकुल के फाइल फोटो

विधायक गीता भुक्कल अस्पताल पहुंचीं

एक्सीडेंट की सूचना मिलने के बाद विधायक गीता भुक्कल घायलों का हाल जानने के लिए शहर के निजी अस्पताल पहुंची। यहां उन्होंने अस्पताल में उपस्थित परिजनों से मिलकर हादसे के संबंध में जानकारी ली।

अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था मुकुल

अस्पताल में उपस्थित परिजनों ने बताया कि मृतक मुकुल अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। उसकी एक बड़ी बहन है। दीपक और मुकुल का सिलेक्शन एयरफोर्स में भी हो चुका था। उनकी आगामी दिनों में ज्वाइनिंग होनी थी। एक साथ दो युवकों की मौत की सूचना के बाद गांव में मातम छा गया। ऐसे में परिजनों का बुरा हाल रहा।

सफाई या लापरवाही

नाले साफ कर सड़क पर छोड़ा कचरे का अंबार

झज्जर। सड़क पर पड़ी नालों से निकली गाद और बंद पड़ी दुकानें।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

शहर के छिक्कारा चौक से पुराना बर्फखाना मार्ग पर नालों की सफाई के बाद निकाला गया कचरा और गाद नहीं उठाए जाने से स्थानीय दुकानदारों और राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नालों से निकाली गई गंदगी सड़कों और दुकानों के सामने पड़ी होने के कारण दुर्गंध फैल रही है, जिससे दुकानदारी प्रभावित हो रही है। दुकानदारों का कहना है कि नालों की सफाई के बाद कचरे और गाद को साथ-साथ ही उठाना चाहिए था, लेकिन एक दिन बीत जाने के बाद भी नहीं उठाया गया। जिसके कारण दिनभर दुकानदारी प्रभावित रही, वहीं कुछ दुकानदारों ने अपनी दुकान ही नहीं खोली। जिससे व्यापारियों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। उन्होंने नालों की सफाई के साथ-साथ निकाले गए कचरे और गाद को भी तुरंत उठाने की व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की है ताकि बाजार में स्वच्छता बनी रहे और लोगों को अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े। इस संबंध में नप चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने कहा कि नालों से निकले कचरे और गाद को जल्द उठाने के निर्देश दिए गए है। प्रयास यही है कि दुकानदारों और आमजन को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

जल निकासी को हेल्पलाइन नंबर जारी

झज्जर। मानसून के दौरान जिले में कहीं भी जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो, इसके लिए जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। डीसी वर्षा खांगवाल ने सभी संबंधित विभागों को फील्ड में रहकर नियमित मॉनिटरिंग करने, जल निकासी व्यवस्था को बरसात के समय सुचारु बनाए रखने तथा किसी भी समस्या का तत्काल समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि जलनिकासी कार्यों में किसी भी प्रकार से देरी न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने बताया कि झज्जर, बेरी, बहादुरगढ़ और बादली के एसडीएम अपने-अपने उपमंडल क्षेत्रों में जल निकासी कार्यों की लगातार निगरानी कर रहे हैं। इसके साथ ही विभिन्न विभागों की संयुक्त निरीक्षण टीम संभावित जलभराव वाले क्षेत्रों का नियमित दौरा कर रही हैं, ताकि आवश्यकता पड़ते ही तत्काल कार्रवाई की जा सके। उन्होंने बताया कि मानसून के दौरान किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए लघु सचिवालय परिसर में 24 घंटे कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। नागरिक किसी भी जलभराव या संबंधित समस्या की सूचना 01251-254270 पर दे सकते हैं।

झज्जर। जल निकासी व्यवस्था का जायजा लेते हुए एसडीएम बेरी रेणुका नांदल।

मोबाइल के विवाद में युवक को पेंचकस घोंपा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर की दुर्गा कॉलोनी में एक युवक को पेंचकस घोंपने और जाने से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। दो युवकों पर आरोप है। शिकायत के आधार पर लाइनपार थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

वारदात कबीर बस्ती के निवासी चिंटू के साथ हुई है। चिंटू का कहना है कि 23 जुलाई को वह किसी काम के सिलसिले में दुर्गा कॉलोनी की तरफ जा रहा था। इसी दौरान पीछे से ढैया बस्ती निवासी 2 युवक आए। उन्होंने रास्ता रोका और गाली गलौज करने लगे। फिर एक ने पकड़ लिया और दूसरे ने कमर में पेंचकस से वार किए। इसके बाद जान से मारने की धमकी देकर चले गए। इसके बाद उसे अस्पताल में ले जाया गया, जहां से पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया। सूचना पाकर पुलिस पीजीआई में घायल के बयान लेने पहुंची। चिंटू का आरोप है कि 2 दिन पहले फोन को लेकर आरोपियों के साथ झगड़ा हुआ था। उसी रंजिश के चलते जान से मारने की कोशिश की गई है। उधर, पुलिस ने बयान के आधार पर संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया है। आरोपों की सत्यता जांच का विषय है। पुलिस का कहना है कि 2 नामजद आरोपियों पर केस दर्ज किया है। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा।

मकान से लैपटॉप व नकदी चोरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

क्षेत्र के गांव सरौला में चोरों द्वारा एक घर से लैपटॉप, मोबाइल व नकदी चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया है। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है, लेकिन अभी तक चोरों का सुराग नहीं लग पाया है।

पुलिस को दी शिकायत में अरविंद कुमार ने बताया कि बीती 21 जुलाई की रात जब वह घर पर सोया हुआ था तो रात करीब साढ़े तीन बजे उसकी नींद खुल गई। जब उसने घर का दरवाजा खुला देखा तो पता चला कि उसके मकान में चोरी हो गई है। चोर उसे घर से एक मोबाइल, एक लैपटॉप और करीब दो हजार रुपये की नकदी चुरा ले गए। उन्होंने अपने स्तर पर जांच भी की, लेकिन कुछ पता नहीं चला। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

चुनाव बहादुरगढ़ के गांव सांखोल निवासी अधिवक्ता ने दर्ज की ऐतिहासिक जीत

बार काउंसिल ऑफ दिल्ली के चुनाव में 2323 मत प्राप्त कर फिर जीते संजय राठी

अप्रैल 2018 में जीत के बाद चुने गए थे सह अध्यक्ष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बार काउंसिल ऑफ दिल्ली के चुनाव में गांव सांखोल निवासी वरिष्ठ अधिवक्ता संजय राठी ने 2323 मत प्राप्त कर जीत का ऐतिहासिक परचम लहराया। उन्होंने बार के हजारों सदस्यों के अटूट विश्वास का आभार जताते हुए कहा कि यह उनके वर्षों से किए गए समर्पित कार्य का प्रमाण है। अप्रैल-2018 में हुए चुनावों में भी जीत के बाद संजय राठी 28 जुलाई 2018 से 7 सितंबर 2020 तक दिल्ली बार काउंसिल के सह-अध्यक्ष चुने गए थे। बता दें कि बार काउंसिल ऑफ दिल्ली के चुनाव में तीन दिनों तक दिल्ली हाईकोर्ट परिसर में 21, 22 और 23 फरवरी को मतदान हुआ था। चुनाव में 221 उम्मीदवारों ने 18 सामान्य सीटों, 5 महिला आरक्षित सीटों और 2 महिला को-ऑप्शन सीटों के लिए चुनाव लड़ा। जिसके बाद से अब तक वोटों की गिनती जारी थी। अब अधिवक्ता संजय राठी भी 2323 वोट प्राप्त कर चुनाव जीतने के बाद सदस्य बन गए हैं और अब इन्हीं 25 सदस्यों में से नई कार्यकारिणी गठन किया जाएगा। बहादुरगढ़ के गांव सांखोल निवासी अधिवक्ता संजय राठी को अधिवक्ताओं का भारी समर्थन प्राप्त हुआ। दूसरी बार अधिवक्ताओं ने उनका समर्थन किया।

संजय राठी ने अधिवक्ताओं के हितों के लिए लड़ी लड़ाई

संजय राठी ने पहली टर्म में दिल्ली बार काउंसिल में पंजीकृत अधिवक्ताओं के लिए लागू जीवन बीमा पॉलिसियों और मेडिक्लेम पॉलिसियों को एकीकृत करने में सक्रिय भूमिका निभाई थी। वित्तीय सहायता के अलावा, दिल्ली बार काउंसिल ने दिल्ली में ऑक्सीजन की भारी कमी के समय अधिवक्ताओं और उनके परिवारों को ऑक्सीजन सिलेंडर भी उपलब्ध कराए। संजय राठी भारत के सर्वोच्च न्यायालय में अतिरिक्त महाधिवक्ता भी रह चुके हैं। अधिवक्ता संजय राठी ने सभी अधिवक्ताओं व सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा उन्होंने सदैव बार के हित, अधिवक्ताओं के अधिकारों तथा उनके सम्मान की लड़ाई को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है और भविष्य में भी देते रहेंगे।

नया गांव जाटयान में 14 लाख से बनी गलियों का विधायक ने किया उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

विधायक राजेश जून ने शनिवार को नया गांव जाटयान में लगभग 14 लाख रुपये की लागत से कराए गए विकास कार्यों का उद्घाटन व नए निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। ग्रामवासियों ने विधायक राजेश जून का स्वागत किया और विकास कार्यों के लिए उनका आभार व्यक्त किया। विधायक राजेश जून ने बताया कि गांव में 14 लाख रुपये की परियोजना से निर्मित दो गलियों का उद्घाटन किया गया है। साथ ही एक नए कमरे के निर्माण कार्य का ग्रामवासियों के साथ नारियल फोड़कर विधिवत शुभारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के प्रत्येक गांव में विकास कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा कराया जा रहा है ताकि लोगों को बेहतर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास कार्यों में इस्तेमाल होने वाली सामग्री और निर्माण की गुणवत्ता पर ग्रामीण स्वयं भी नजर रखें। राजेश जून ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के आशीर्वाद से बहादुरगढ़ विधानसभा क्षेत्र में लगातार नए विकास कार्यों की मंजूरी मिल रही है और आए दिन विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शुभारंभ किया जा रहा है।

बहादुरगढ़। नया गांव में जाटयान में विकास कार्यों का शुभारंभ करते विधायक राजेश जून।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के प्रति लोगों का आकर्षण तेजी से बढ़ा है। छोटे शहरों और कस्बों के निवेशक भी अब म्यूचुअल फंड को बचत और निवेश का महत्वपूर्ण माध्यम मानने लगे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, आसान निवेश प्रक्रिया, वित्तीय जागरूकता और लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न की संभावनाओं ने म्यूचुअल फंड उद्योग को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। मिड और स्मॉल कैप फंडों में बढ़ती भागीदारी इसी बदलाव का परिणाम मानी जा रही है।

मिड और स्मॉल कैप फंडों पर निवेशकों का भरोसा कायम

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- *बाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद बन रहे पहली पसंद*
- *दो वर्षों में करोड़ों नए निवेशक जुड़े, दीर्घकालिक रिटर्न से बढ़ा विश्वास*
- *विशेषज्ञों ने ऊंचे वैल्यूएशन के बीच सतर्क निवेश की दी सलाह*

शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के दौरान कई बार तेज उतार-चढ़ाव देखने को मिला। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनाव, ब्याज दरों में बदलाव और घरेलू बाजार में समय-समय पर आई गिरावट के बावजूद भारतीय खुदरा निवेशकों का भरोसा मिड कैप और स्मॉल कैप म्यूचुअल फंडों पर लगातार मजबूत बना हुआ है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों का किया गया एक अहम विश्लेषण है। रिपोर्ट बताती है कि बाजार की अस्थिरता निवेशकों के उत्साह को कम नहीं कर सकी। इसके विपरीत, बड़ी संख्या में नए निवेशकों ने इन श्रेणियों में निवेश शुरू किया और पहले से निवेश कर रहे लोगों ने भी अपना निवेश जारी रखा। पोर्ट के अनुसार, जून 2024 से जून 2026 के बीच मिड कैप और स्मॉल कैप फंडों में खुदरा निवेशकों की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। जून 2024 में जहां मिड कैप फंडों के फोलियो की संख्या लगभग 1.53 करोड़ थी, वहीं जून 2026 तक यह बढ़कर 2.55 करोड़ हो गई। इसी अवधि में स्मॉल कैप फंडों के फोलियो 2.03 करोड़ से बढ़कर 2.87 करोड़ तक पहुंच गए। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि निवेशकों का रुझान केवल बड़े बाजार पूंजीकरण वाली कंपनियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे बेहतर संभावनाओं वाली मध्यम और छोटी कंपनियों में भी निवेश के अवसर तलाश रहे हैं।

सभी ओपन-एंडेड इक्विटी फंड फोलियो का 32 प्रतिशत हिस्सा

आज मिड कैप और स्मॉल कैप फंड मिलकर देश के सभी ओपन-एंडेड इक्विटी म्यूचुअल फंड फोलियो का 32 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बन चुके हैं। यह हिस्सा लगातार बढ़ रहा है, जो बताता है कि भारतीय निवेशकों की सोच अब लंबी अवधि के निवेश और संपत्ति निर्माण की ओर तेजी से बदल रही है। इस बढ़ते भरोसे के पीछे सबसे बड़ा कारण इन श्रेणियों का मजबूत दीर्घकालिक प्रदर्शन है। 30 जून 2026 तक के आंकड़ों के अनुसार, मिड कैप फंडों ने पिछले तीन वर्षों में 18.76 प्रतिशत का चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) और पांच वर्षों में 16.33 प्रतिशत का सीएजीआर दिया है। वहीं स्मॉल कैप फंडों ने तीन वर्षों में 17.68 प्रतिशत तथा पांच वर्षों में 17.06 प्रतिशत का सीएजीआर रिटर्न निवेशकों को उपलब्ध कराया।

उतार-चढ़ाव की संभावना ज्यादा

यह समझना जरूरी है कि अधिक रिटर्न के साथ जोखिम भी अधिक होता है। मिड और स्मॉल कैप कंपनियों के शेयरों में बड़े उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है। यही कारण है कि बाजार में गिरावट आने पर इन श्रेणियों में नुकसान भी अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। इसके बावजूद निवेशकों का विश्वास इसलिए बना हुआ है क्योंकि वे अब अल्पकालिक उतार-चढ़ाव के बजाय दीर्घकालिक निवेश रणनीति को प्राथमिकता दे रहे हैं। निवेशकों का यह भरोसा केवल फोलियो की संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रबंधनाधीन परिसंपत्तियों में भी साफ दिखाई देता है। जून 2025 में मिड कैप फंडों का एयूएम 4.32 लाख करोड़ रुपये था, जो जून 2026 तक बढ़कर 5.06 लाख करोड़ रुपये हो गया। इसी तरह स्मॉल कैप फंडों का एयूएम 3.55 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 4.30 लाख करोड़ तक पहुंच गया।

निवेशक सतर्क रहें

आईसीआरए एनालाइस्टिक ने निवेशकों को सतर्क रहने की भी सलाह दी है। संस्था का कहना है कि वर्तमान समय में मिड और स्मॉल कैप शेयरों के वैल्यूएशन अपेक्षाकृत ऊंचे स्तर पर हैं। यदि आने वाले समय में कंपनियों की आय (कॉरपोरेट अर्निंग्स) बाजार की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं बढ़ती है, तो इन श्रेणियों में करेक्शन देखने को मिल सकता है। ऐसे में निवेशकों को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि पिछले वर्षों जैसा रिटर्न भविष्य में भी निश्चित रूप से मिलेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में इन फंडों का प्रदर्शन केवल वैल्यूएशन बढ़ने पर नहीं, बल्कि कंपनियों के वास्तविक कारोबार और मुनाफे में वृद्धि पर निर्भर करेगा।

क्या कहते हैं आंकड़े

वित्तीय सलाहकारों का सुझाव है कि मिड और स्मॉल कैप फंडों में निवेश हमेशा लंबी अवधि के लक्ष्य को ध्यान में रखकर करना चाहिए। एकमुश्त बड़ी राशि लगाने के बजाय नियमित एसआईपी के माध्यम से निवेश करना अपेक्षाकृत सुरक्षित रणनीति मानी जाती है। साथ ही निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप फंडों के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए, ताकि जोखिम और रिटर्न दोनों का बेहतर प्रबंधन किया जा सके।

कुल मिलाकर, एएमएफआई और आईसीआरए एनालाइस्टिक के ताजा आंकड़े यह संकेत देते हैं कि भारतीय खुदरा निवेशकों का भरोसा मिड और स्मॉल कैप फंडों पर पहले से अधिक मजबूत हुआ है। बेहतर दीर्घकालिक प्रदर्शन और नियमित निवेश ने इन श्रेणियों को लोकप्रिय बनाया है। हालांकि, ऊंचे वैल्यूएशन और संभावित बाजार उतार-चढ़ाव को देखते हुए निवेशकों को संयम, विविधीकरण और लंबी अवधि की रणनीति अपनाकर ही निवेश करना चाहिए। यही तरीका भविष्य में बेहतर और टिकाऊ संपत्ति निर्माण का आधार बन सकता है।

मृत्यु के बाद क्लेम होगा आसान

नॉमिनेशन व वसीयत अब भी जरूरी

सेबी ने एएमएफआई के मानकों में बदलाव कर दी बड़ी राहत | अब परिवारों को आर्थिक और मानसिक परेशानियां नहीं झेलनी होंगी | रिकॉर्ड में नाम की स्पेलिंग में मामूली अंतर होने से नहीं होगी दिक्कत

जानकारी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों के लिए भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने एक महत्वपूर्ण और निवेशक हितैषी कदम उठाया है। निवेशक की मृत्यु के बाद उसके परिवार या कानूनी उत्तराधिकारियों को म्यूचुअल फंड यूनिट्स का ट्रांसमिशन (हस्तांतरण) कराने में अक्सर कई तरह की तकनीकी और दस्तावेजी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। पते में अंतर, नाम की स्पेलिंग अलग होना, हस्ताक्षर मेल न खाना या पुराने रिकॉर्ड जैसी छोटी-छोटी वजहों से क्लेम महीनों तक लंबित रहता था। कई मामलों में परिवारों को आर्थिक और मानसिक दोनों तरह की परेशानियां झेलनी पड़ती थीं। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए सेबी ने एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के मानकों में बदलाव कर ट्रांसमिशन प्रक्रिया को अधिक सरल, पारदर्शी और निवेशक-अनुकूल बनाने की दिशा में अहम कदम उठाया है। नए दिशा-निर्देशों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी निवेशक के निधन के बाद उसके परिवार को तकनीकी कारणों से अनावश्यक परेशान न होना पड़े।

पते में अंतर अब नहीं बनेगा बड़ी बाधा

पहले यदि म्यूचुअल फंड फोलियो में दर्ज पता और क्लेम के समय दिए गए दस्तावेजों का पता अलग होता था, तो एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) क्लेम रोक देती थी। अब वैध और अद्यतन दस्तावेजों के आधार पर नया पता स्वीकार किया जा सकेगा। इससे पुराने रिकॉर्ड के कारण होने वाली देरी काफी हद तक समाप्त होगी।

छोटी गलतियां भी होंगी स्वीकार

अक्सर पैन कार्ड, आधार, बैंक खाते और म्यूचुअल फंड रिकॉर्ड में नाम की स्पेलिंग में मामूली अंतर होने से ट्रांसमिशन अटक जाता था। अब आधार, पासपोर्ट जैसे सेल्फ-सर्टिफाइड दस्तावेजों के आधार पर ऐसे मामलों का समाधान किया जा सकेगा। हस्ताक्षर मेल न खाने की स्थिति में भी रजिस्ट्रार एंड ट्रांसफर एजेंट (आरटीए) निर्धारित प्रक्रिया के तहत समाधान करेंगे।

सभी एएमसी में एक जैसी प्रक्रिया

सेबी ने एएमएफआई को निर्देश दिया है कि सभी एसेट मैनेजमेंट कंपनियों और संबंधित कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाए, ताकि पूरे देश में ट्रांसमिशन प्रक्रिया एक समान तरीके से लागू हो। इससे निवेशकों को अलग-अलग फंड हाउस में अलग नियमों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

कौन क्लेम कर सकता है?

- क्लेम की प्रक्रिया इस बात पर निर्भर करती है कि निवेश किस प्रकार किया गया था।
- यदि निवेश संयुक्त नाम से है और एक निवेशक का निधन हो जाता है, तो जीवित धारक यूनिट्स अपने नाम कराने के लिए आवेदन कर सकता है।
- यदि निवेश एकल नाम से है और नॉमिनी दर्ज है, तो नॉमिनी ट्रांसमिशन के लिए आवेदन कर सकता है।
- यदि नॉमिनी नहीं है, तो कानूनी उत्तराधिकारी को उत्तराधिकार प्रमाणपत्र, लीगल हेयरशिप सर्टिफिकेट, वसीयत या अन्य आवश्यक दस्तावेजों के आधार पर दावा करना होगा। ऐसे मामलों में प्रक्रिया अपेक्षाकृत लंबी हो सकती है।

किन दस्तावेजों की होगी जरूरत?

■ ट्रांसमिशन रिक्वेस्ट फॉर्म ■ निवेशक का मृत्यु प्रमाणपत्र ■ पैन कार्ड ■ केवाईसी दस्तावेज ■ बैंक खाते का प्रमाण ■ यदि नॉमिनी नहीं है तो सक्सेशन सर्टिफिकेट, लीगल हेयरशिप सर्टिफिकेट, वसीयत या अन्य कानूनी दस्तावेज भी प्रस्तुत करने पड़ सकते हैं।

किन कारणों से अटकेगा क्लेम?

- नॉमिनी का नाम दर्ज न होना।
- केवाईसी अधूरा या पुराना होना।
- बैंक, पैन और म्यूचुअल फंड रिकॉर्ड में अलग-अलग जानकारी होना।
- कानूनी उत्तराधिकारियों के बीच विवाद।
- अलग-अलग एएमसी में कई फोलियो होने से दस्तावेजी प्रक्रिया जटिल होना।

आज ही करें ये चार काम

- पहला, हर म्यूचुअल फंड फोलियो में नॉमिनी अवश्य दर्ज करें और समय-समय पर उसकी समीक्षा करें।
- दूसरा, पैन, आधार, खाते और म्यूचुअल फंड रिकॉर्ड में नाम, जन्मतिथि, पता और अन्य विवरण समान रखें।
- तीसरा, यदि आपका निवेश बड़ा है तो केवल नॉमिनेशन पर निर्भर न रहें। एक विधिवत वसीयत तैयार करें। यह संपत्ति के अंतिम उत्तराधिकार को लेकर भविष्य के विवादों से बचाती है।
- चौथा, अपने परिवार को यह जानकारी अवश्य दें कि आपने किन-किन म्यूचुअल फंडों में निवेश किया है। कई बार परिवार को निवेश की जानकारी ही नहीं होती, जिससे वर्षों तक रकम बिना क्लेम के पड़ी रहती है।

नॉमिनी व उत्तराधिकारी में अंतर समझें

कई निवेशक यह मान लेते हैं कि नॉमिनी निवेश का अंतिम मालिक होता है, जबकि ऐसा हमेशा नहीं होता। नॉमिनी निवेश की राशि प्राप्त करने का अधिकृत व्यक्ति होता है। अंतिम स्वामित्व उत्तराधिकार कानून या वैध वसीयत के अनुसार तय होता है। बड़े निवेश वाले परिवारों के लिए एस्टेट प्लानिंग-वसीयत तैयार करना महत्वपूर्ण है।

निवेशक हित में बड़ा सुधार

सेबी का यह कदम ऐसे समय आया है, जब देश में म्यूचुअल फंड निवेशकों की संख्या लगातार बढ़ रही। करोड़ों निवेशक एसआईपी व अन्य योजनाओं के माध्यम से लंबी अवधि के लिए निवेश कर रहे हैं। ऐसे में निवेशक की मृत्यु के बाद परिवार को सरल- समयबद्ध तरीके से राशि मिलना वित्तीय व्यवस्था में विश्वास बढ़ाने के लिए आवश्यक है। सेबी के नए दिशा-निर्देश न केवल ट्रांसमिशन प्रक्रिया को तेज-पारदर्शी बनाएंगे, बल्कि निवेशकों में भरोसा मजबूत करेंगे कि उनकी मेहनत की कमाई जरूरत पड़ने पर बिना कानूनी बाधाओं के परिवार तक पहुंच सकेगी।

जानें जोखिम पोर्टफोलियो और टैक्स से जुड़े जरूरी नियम

सिर्फ रिटर्न नहीं, इन पैमानों पर चुनें सही म्यूचुअल फंड

अलर्ट
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड आज करोड़ों भारतीयों की निवेश यात्रा का अहम हिस्सा बन चुके हैं। सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए हर महीने छोटी-छोटी रकम निवेश कर लंबी अवधि में बड़ा फंड तैयार किया जा सकता है। लेकिन बाजार में हजारों म्यूचुअल फंड योजनाएं उपलब्ध होने के कारण सबसे बड़ी चुनौती सही फंड का चुनाव करना है। अक्सर निवेशक पिछले एक साल का रिटर्न या पांच स्टार रेटिंग देखकर फैसला ले लेते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यही सबसे बड़ी भूल साबित हो सकती है। दरअसल, किसी भी म्यूचुअल फंड का मूल्यांकन केवल रिटर्न के आधार पर नहीं किया जा सकता। फंड का जोखिम, खर्च, पोर्टफोलियो, फंड मैनेजर और निवेश का उद्देश्य जैसे कई पहलू भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। यदि दो फंडों में से किसी एक को चुनना है, तो कुछ बुनियादी मानकों को समझना बेहद जरूरी है।

सबसे पहले एक जैसी श्रेणी के फंड की तुलना करें

किसी भी तुलना की शुरुआत सही आधार से होनी चाहिए। यदि एक फंड लार्ज कैप है और दूसरा मिड कैप, तो दोनों की तुलना करना उचित नहीं होगा। दोनों का निवेश उद्देश्य, जोखिम और संभावित रिटर्न अलग-अलग होते हैं। यदि आपका लक्ष्य स्थिरता और अपेक्षाकृत कम जोखिम है, तो लार्ज कैप फंडों की तुलना करें। यदि अधिक जोखिम लेकर लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न चाहते हैं, तो मिड कैप- स्मॉल कैप श्रेणी के भीतर विकल्प चुनें।

डायरेक्ट-रेगुलर प्लान में अंतर

हर म्यूचुअल फंड में निवेश के दो विकल्प होते हैं—डायरेक्ट और रेगुलर। डायरेक्ट प्लान में निवेशक सीधे एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) के माध्यम से निवेश करता है। इसमें किसी एजेंट का कमीशन नहीं होता, इसलिए एक्सपेंस रेशियो कम रहता है और लंबे समय में बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना रहती है। रेगुलर प्लान उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिन्हें वित्तीय सलाहकार की सहायता की जरूरत होती है।

केवल रिटर्न नहीं, एक्सपेंस रेशियो भी देखें

दो फंड यदि लगभग समान रिटर्न दे रहे हैं, तो कम एक्सपेंस रेशियो वाला फंड बेहतर माना जाता है। एक्सपेंस रेशियो वह वार्षिक शुल्क है जो एएमसी आपके निवेश के प्रबंधन के बदले लेती है। देखने में यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन 15-20 वर्षों की लंबी अवधि में यही अंतर लाखों रुपये के अतिरिक्त रिटर्न में बदल सकता है।

दोनों फंड किन कंपनियों में निवेश कर रहे हैं

कई निवेशक अलग-अलग फंड खरीद लेते हैं, लेकिन बाद में पता चलता है कि दोनों की शीर्ष 10 होल्डिंग लगभग एक जैसी हैं। निवेश से पहले दोनों फंडों की प्रमुख होल्डिंग और सेक्टर एलोकेशन अवश्य देखें। जोखिम के मुकाबले रिटर्न का मूल्यांकन करें। हर अधिक रिटर्न देने वाला फंड बेहतर नहीं होता।

रिश्ते में प्यार के साथ पैसों की समझ भी जरूरी

पति-पत्नी की कमाई में बड़ा-अंतर हो तो कैसे बनाएं फाइनेंशियल प्लान

बिजनेस डेस्क। शादी केवल दो लोगों का भावनात्मक रिश्ता नहीं, बल्कि दो आर्थिक जिम्मेदारियों का भी मिलन है। आज के दौर में बड़ी संख्या में पति-पत्नी दोनों कामकाजी हैं, लेकिन अक्सर उनकी आय समान नहीं होती। किसी की सैलरी अधिक होती है तो कोई अपेक्षाकृत कम कमाता है। ऐसे में बड़ा सवाल यह होता है कि घर का खर्च कैसे बांटा जाए, ताकि न किसी एक पर आर्थिक बोझ बढ़े और न रिश्ते में असंतुलन पैदा हो। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि सफल वैवाहिक जीवन की नींव केवल भरोसे और प्यार पर नहीं, बल्कि पारदर्शी वित्तीय योजना पर भी टिकी होती है। पैसों को लेकर स्पष्ट समझ और नियमित संवाद भविष्य के विवादों से बचाता है। दोनों को आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस कराता है।

हर परिवार के लिए एक जैसा फॉर्मूला नहीं

फाइनेंशियल प्लानिंग का कोई सार्वभौमिक नियम नहीं होता। हर परिवार की आय, जिम्मेदारियां, जीवनशैली और भविष्य के लक्ष्य अलग-अलग होते हैं। किसी दूसरे का मॉडल अपनाने के बजाय अपनी परिस्थितियों के अनुसार वित्तीय व्यवस्था बनाना समझदारी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि कोई भी निर्णय दोनों की सहमति और सुविधा से लिया जाए। आर्थिक मामलों में पारदर्शिता रिश्ते को मजबूत बनाती है।

क्या आधा-आधा खर्च बांटना सही है?

कई दंपती यह मान लेते हैं कि सभी खर्च 50-50 प्रतिशत बांट देना बराबरी का सबसे अच्छा तरीका है। लेकिन यह हर स्थिति में उचित नहीं होता। मान लीजिए पति की मासिक आय 1.50 लाख और पत्नी 50,000 रुपये कमाती हैं। यदि दोनों 40-40 हजार घर के खर्च में दें, तो पत्नी की आय का बड़ा हिस्सा खर्च हो जाएगा, जबकि पति के पास बचत और निवेश के लिए पर्याप्त राशि बची रहेगी। ऐसी व्यवस्था आर्थिक रूप से संतुलित नहीं मानी जाती क्योंकि इससे कम आय वाले साथी पर अपेक्षाकृत अधिक दबाव पड़ता है।

आय के अनुपात में खर्च बांटना बेहतर विकल्प

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार यदि पति-पत्नी की आय में बड़ा अंतर है तो खर्च भी आय के अनुपात में बांटना अधिक व्यावहारिक होता है। उदाहरण के लिए यदि एक साथी कुल आय का 70 प्रतिशत कमाता है और दूसरा 30 प्रतिशत, तो साझा खर्चों में योगदान भी लगभग उसी अनुपात में रखा जा सकता है। इस व्यवस्था से दोनों के पास बचत, निवेश और व्यक्तिगत जरूरतों के लिए पर्याप्त धन बचता है।

जॉइंट अकाउंट हो सकता है अच्छा समाधान

- आज कई कामकाजी दंपती साझा खर्चों के लिए जॉइंट बैंक अकाउंट का विकल्प अपना रहे हैं।
- इस व्यवस्था में दोनों अपनी आय का एक तय हिस्सा संयुक्त खाते में जमा करते हैं। इसी खाते से घर का किराया, ईएमआई, राशन, बिजली-पानी, बच्चों की फीस और अन्य साझा खर्च पूरे किए जाते हैं। वहीं शेष राशि दोनों अपने व्यक्तिगत खातों में रखते हैं, जिससे उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता भी मिलती है। इससे न तो हर छोटे खर्च का हिसाब देना पड़ता है और न ही वित्तीय तनाव बढ़ता है।

बचत और निवेश की भी संयुक्त रणनीति बनाएं

घर का बजट केवल खर्च तक सीमित नहीं होना चाहिए। पति-पत्नी को मिलकर भविष्य के वित्तीय लक्ष्य तय करने चाहिए। इनमें आपातकालीन फंड, बच्चों की शिक्षा, घर खरीदने, रिटायरमेंट फंड, स्वास्थ्य बीमा, जीवन बीमा, म्यूचुअल फंड एसआईपी और अन्य निवेश शामिल हो सकते हैं। दोनों नियमित निवेश करते हैं, तो आर्थिक सुरक्षा मजबूत होती है।

पैसों पर खुलकर बात करना जरूरी

भारतीय परिवारों में अक्सर पैसों को लेकर खुलकर चर्चा नहीं होती। यही भविष्य में गलतफहमियों और विवादों का कारण बन सकता है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि पति-पत्नी को अपनी आय, खर्च, कर्ज, निवेश और भविष्य की योजनाओं पर नियमित रूप से बातचीत करनी चाहिए।

इन गलतियों से बचें

- एक-दूसरे से आय या कर्ज की जानकारी छिपाना।
- बिना चर्चा के बड़े वित्तीय फैसले लेना।
- केवल एक व्यक्ति पर पूरे परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी डाल देना।
- आपातकालीन फंड न बनाना।
- बीमा और निवेश को नजरअंदाज करना।
- हर खर्च का अत्यधिक हिसाब से तनाव पैदा करना।

एसआईपी और एसडब्ल्यूपी की स्मार्ट रणनीति से रिटायरमेंट के बाद मिल सकती है नियमित आय

1,000 रुपये की एसआईपी से बन सकता 1 करोड़ का रिटायरमेंट फंड

हर वर्ष 10% बढ़ाएं एसआईपी कंपाउंडिंग की ताकत से तैयार होगा बड़ा कॉर्पस

बिजनेस डेस्क

रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड बनाने के लिए हमेशा मोटी सैलरी होना जरूरी नहीं है। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि यदि निवेशक कम उम्र में नियमित निवेश शुरू करे, हर साल निवेश बढ़ाता रहे और लंबी अवधि तक अनुशासन बनाए रखे, तो छोटी-सी एसआईपी भी करोड़ों रुपये का रिटायरमेंट फंड तैयार कर सकती है। इसके बाद उसी फंड से सिस्टेमैटिक विदड्रॉल प्लान (एसडब्ल्यूपी) के जरिए हर महीने नियमित आय भी प्राप्त की जा सकती है। दरअसल, एसआईपी और एसडब्ल्यूपी एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां एसआईपी नौकरी के दौरान धीरे-धीरे संपत्ति बनाने का माध्यम है, वहीं एसडब्ल्यूपी रिटायरमेंट के बाद उसी संपत्ति को नियमित मासिक आय में बदलने का तरीका है। यदि दोनों का सही तरीके से उपयोग किया जाए तो व्यक्ति बिना आर्थिक तनाव के रिटायरमेंट का जीवन बिता सकता है।

कैसे काम करती है एसआईपी+ एसडब्ल्यूपी रणनीति

मान लीजिए कोई व्यक्ति 28 वर्ष की उम्र में नौकरी शुरू करता है और हर महीने केवल 1,000 की एसआईपी शुरू करता है। वह अपनी आय बढ़ने के साथ हर साल एसआईपी की राशि में 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी करता है और 60 वर्ष की उम्र तक लगातार निवेश करता रहता है।

इस उदाहरण से समझें

- निवेश शुरू करने की आयु : 28 वर्ष
- शुरुआती एसआईपी : 1,000 प्रति माह
- हर साल एसआईपी में बढ़ोतरी : 10%
- अनुमानित वार्षिक रिटर्न : 12%
- निवेश अवधि : 32 वर्ष

यह भी जानें

- कुल निवेश : 24.13 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : 1.05 करोड़ रुपये
- कुल लाभ : लगभग 80.98 लाख रुपये
- यानी निवेशक ने करीब 24 लाख रुपये जमा किए, लेकिन कंपाउंडिंग और नियमित निवेश बढ़ाने की वजह से रिटायरमेंट तक उसका फंड एक करोड़ रुपये से अधिक हो गया।

असली ताकत है स्टेप अप एसआईपी

इस उदाहरण की सबसे महत्वपूर्ण बात 1,000 रुपये की शुरुआती एसआईपी नहीं, बल्कि हर साल उसमें 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। अधिकांश लोगों की आय समय के साथ बढ़ती है। यदि वे हर साल अपनी एसआईपी भी बढ़ाते रहें तो बिना अतिरिक्त आर्थिक दबाव के बड़ी पूंजी तैयार की जा सकती है। यदि एसआईपी की राशि पूरे 32 वर्षों तक 1,000 रुपये ही रखी जाए तो एक करोड़ रुपये का लक्ष्य हासिल करना बेहद मुश्किल होगा। इसलिए हर वेतन वृद्धि के साथ एसआईपी बढ़ाने की आदत लंबी अवधि में लाखों रुपये का अतिरिक्त लाभ दिला सकती है।

क्या 12% रिटर्न की उम्मीद वाजिब है?

- इस उदाहरण में 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न केवल गणना के लिए लिया गया है। यह कोई गारंटीड रिटर्न नहीं है।
- हालांकि पिछले कई वर्षों के आंकड़े बताते हैं कि फ्लेक्सी कैप, मल्टी कैप, लार्ज एंड मिडकैप और कई इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने लंबी अवधि में लगभग इसी स्तर या इससे अधिक का औसत रिटर्न दिया है। हालांकि बाजार जोखिम हमेशा बना रहता है और किसी भी वर्ष रिटर्न कम या ज्यादा हो सकता है।

रिटायरमेंट बाद कैसे मिलेगी हर माह आय

रिटायरमेंट के बाद सबसे बड़ी चुनौती होती है नियमित आय का स्रोत बनाए रखना। यही काम एसडब्ल्यूपी करता है। मान लीजिए रिटायरमेंट के समय निवेशक के पास 1.50 करोड़ रुपये का फंड है और वह इसे किसी मीडियम ड्यूरेशन डेट फंड या कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड में निवेश करता है।

यदि निम्नलिखित मान्यताएं ली जाएं

- निवेश राशि : 1.50 करोड़ रुपये
- अनुमानित वार्षिक रिटर्न : 6%
- मासिक निकासी : 1 लाख
- निकासी अवधि : 12 वर्ष
- इस अवधि में कुल निकासी : 1.44 करोड़ रुपये
- निकासी के दौरान अर्जित लाभ: लगभग 43.13 लाख रुपये
- 12 वर्ष बाद बची राशि : लगभग 4.13 लाख रुपये
- इस तरह निवेशक पूरे 12 वर्षों तक हर महीने 1 लाख प्राप्त कर सकता है, जबकि शेष राशि निवेशित रहकर रिटर्न भी अर्जित करती रहती है।

एसडब्ल्यूपी क्यों है बेहतर विकल्प

यदि रिटायरमेंट के समय पूरी राशि एक साथ निकाल ली जाए तो उसके जल्दी खत्म होने का खतरा रहता है। इसके विपरीत एसडब्ल्यूपी में केवल जरूरत के अनुसार हर महीने निश्चित राशि निकाली जाती है और बाकी पैसा निवेशित रहता है। इससे फंड अधिक समय तक चलता है और नियमित आय भी मिलती रहती है।

विशेषज्ञों के अनुसार एसडब्ल्यूपी पारंपरिक पेंशन की तरह नियमित नकदी प्रवाह उपलब्ध कराने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

किन बातों का रखें ध्यान

- इक्विटी में 12% और डेट फंड में 6% रिटर्न की कोई गारंटी नहीं होती।
- रिटायरमेंट के नजदीक आते समय पोर्टफोलियो में जोखिम धीरे-धीरे कम करना चाहिए।
- महंगाई को ध्यान में रखते हुए रिटायरमेंट फंड का लक्ष्य तय करें।
- एसडब्ल्यूपी की मासिक राशि अपने खर्च और उपलब्ध कॉर्पस के अनुसार निर्धारित करें।
- समय-समय पर निवेश की समीक्षा करते रहें।

ऐसे समझें पूरा गणित

एसआईपी चरण

● शुरुआत : 28 वर्ष की आयु ● मासिक एसआईपी : 1,000 रुपये ● हर साल बढ़ोतरी : 10% ● अवधि : 32 वर्ष ● अनुमानित रिटर्न : 12% ● कुल निवेश : 24.13 लाख रुपये ● अनुमानित फंड : 1.05 करोड़ रुपये

एसडब्ल्यूपी चरण

● शुरुआती फंड : 1.50 करोड़ रुपये ● अनुमानित रिटर्न : 6% ● मासिक निकासी : 1 लाख रुपये ● अवधि : 12 वर्ष ● कुल निकासी : 1.44 करोड़ रुपये

खबर संक्षेप

उद्यमियों को समझाया ब्रांडिंग का महत्व

बहादुरगढ़। कॉन्फेडरेशन ऑफ बहादुरगढ़ इंडस्ट्रीज द्वारा उद्यमियों के लिए बिजनेस ग्रोथ थ्रू स्ट्रेटेजिक ब्रांडिंग विषय पर एक विशेष सेशन का आयोजन किया गया। बिजनेस स्ट्रेटेजी विशेषज्ञ विवेक कुमार अग्रवाल ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि प्रतिस्पर्धी दौर में केवल गुणवत्तापूर्ण उत्पाद बनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मजबूत ब्रांड पहचान विकसित करना भी जरूरी है। उन्होंने उद्योगपतियों को रणनीतिक ब्रांडिंग, ग्राहक व्यवहार की समझ, बाजार में प्रभावी पोजिशनिंग, डिजिटल युग में ब्रांड निर्माण तथा दीर्घकालिक बिजनेस ग्रोथ से जुड़े व्यावहारिक सुझाव दिए। इस मौके पर कोबी अध्यक्ष प्रवीण गर्ग, महासचिव प्रदीप कौल, संयुक्त सचिव सुरेंद्र वशिष्ठ, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल, दीपक शर्मा आदि रहे।

विद्यार्थियों और महिलाओं को किया जागरूक

बहादुरगढ़। जागरूकता अभियान के तहत दुर्गा शक्ति टीम ने छोटूराम नगर में महिलाओं और स्कूली विद्यार्थियों को सुरक्षा संबंधी जानकारी दी। दुर्गा शक्ति टीम की सहायक उप निरीक्षक सरला और मुख्य सिपाही टीना ने घर से बाहर निकलते समय बरती जाने वाली सावधानियों, छेड़छाड़, पीछा करने, दुर्घटना, झगड़े या किसी भी आपात स्थिति में तुरंत डायल-112 पर सूचना देने के लिए प्रेरित किया। डायल-112 सेवा से संबंधित पंफ्लेट्स भी वितरित किए।

बीकेडी स्कूल ने ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता में जीते 23 मेडल

200 मीटर दौड़ में अक्षय, 600 में मयंक ने स्वर्ण पदक जीता

झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित खंड स्तरीय प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थी।

कार्तिक ने डिस्कस थ्रो और यश ने शॉट पुट में गोल्ड मेडल जीतकर किया नाम रोशन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

बीकेडी सीनियर सैकेंडरी स्कूल साल्हावास के खिलाड़ियों ने ब्लॉक स्तरीय खेल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए 23 मेडल जीत कर संस्थान का नाम रोशन किया है। जीते गए मेडलों में 18 गोल्ड मेडल तथा 5 सिल्वर मेडल शामिल हैं। 4 गुणा 100 रिले रेस व कबड्डी में जहां स्कूल की टीम ने पहला स्थान प्राप्त किया वहीं 200 मीटर दौड़ में अक्षय, 600 मीटर में मयंक और हर्डल रेस में रवि ने स्वर्ण पदक जीता। सन्नी ने 600 मीटर और हर्डल में रजत पदक हासिल किया। कार्तिक ने डिस्कस थ्रो और यश ने शॉट पुट में गोल्ड मेडल जीता। अंडर -17 आयु वर्ग में अंकित ने 800 मीटर और 1500 मीटर दौड़ में, अनिकेत ने लॉन्ग जंप और हर्डल रेस में स्वर्ण जीता। हर्षित ने भाला फेंक और गौरव ने ट्रिपल जंप में रजत पदक जीता। लड़कियों की 3000 मीटर दौड़ में शिक्षा व शॉटपुट में निधि पहले स्थान पर रही। अंडर -19 आयु वर्ग में हितेश ने 100 मीटर दौड़, मनीष ने ट्रिपल जंप और हर्डल रेस, विवान ने भाला फेंक में स्वर्ण पदक हासिल किया। अंडर-14 आयु वर्ग की शॉटपुट स्पर्धा में मानवी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर विद्यालय निदेशक जितेंद्र रोहिल्ला ने सभी विजेता खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

बहादुरगढ़। छात्र मानव को सम्मानित करते माउंट व्यू स्कूल प्रबंधक।

माउंट व्यू स्कूल में विजेता विद्यार्थियों का सम्मान

बहादुरगढ़। माउंट व्यू सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने खंड स्तर खेल प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर स्कूल का नाम रोशन किया। छात्र मानव ने स्कूल शूटिंग प्रीमियर लीग में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपना चयन सुनिश्चित कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। मानव की इस उपलब्धि पर स्कूल निदेशक देवेंद्र लाठर ने 2100 रुपए व स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया। वहीं ब्लॉक समिति पार्षद राजवीर लाठर गांधी ने भी मानव को 5100 रुपए भेंट कर सम्मानित किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इसके अलावा खंड स्तरीय स्कूली प्रतियोगिता के अंडर-19 वर्ग में शुभम ने 400 मीटर हर्डल दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अंडर-17 वर्ग में निर्माण ने 400 मीटर हर्डल दौड़ में प्रथम स्थान हासिल किया। बॉक्सिंग में खनक और ईशिका ने बॉक्सिंग में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए प्रथम प्राप्त किए। अंडर-14 वर्ग में गौरव ने कुश्ती प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। प्रधानाचार्य सुरेंद्र छिल्लर ने सभी विजेता विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उम्मीद जताई कि जिला व राज्य स्तर पर में होने वाली प्रतियोगिताओं में भी ये विद्यार्थी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

बहादुरगढ़। वैश्य कॉलेज में एडमिशन के लिए आई छात्राएं।

वैश्य पीजी कॉलेज में एडमिशन प्रक्रिया जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

उच्चतर शिक्षा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुसार वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश प्रक्रिया जारी है। प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने बताया कि यूजी प्रथम वर्ष की पहली मेरिट सूची में चयनित छात्राओं को निर्धारित समयावधि में अपनी प्रवेश फीस जमा करवाकर प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण करनी होगी। जबकि पीजी प्रवेश पंजीकरण की अंतिम तिथि 26 जुलाई है। पीजी प्रथम वर्ष की प्रथम प्रोविजनल मेरिट सूची 29 जुलाई तथा अंतिम मेरिट सूची 30 जुलाई को जारी की जाएगी। इसके अंतर्गत चयनित छात्राएं 31 जुलाई से 2 अगस्त तक अपनी फीस जमा करवा सकेंगी।

विज्ञान व गणित प्रश्नोत्तरी में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। शनिवार को पैरामाउंट स्कूल छुछकवास में विज्ञान और गणित प्रश्नोतरी का आयोजन किया गया। इसमें तीसरी से पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ निदेशक मंजीत फौगाट ने किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों से विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होती है और उनका मनोबल भी बढ़ता है।

जंतर-मंतर पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में असपा ने सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। लाठीचार्ज के विरोध में रोष मार्च निकालती आजाद समाज पार्टी।

जंतर-मंतर पर नीट परीक्षा से जुड़े मुद्दों को लेकर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे युवाओं पर हुए कथित लाठीचार्ज के विरोध में शनिवार को आजाद समाज पार्टी के बादली विधानसभा अध्यक्ष प्रदीप भोगल के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने शहर के अंबेडकर चौक से लघु सचिवालय तक पैदल मार्च करते हुए केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। हाथों में तख्तियां और बैनर लेकर प्रदर्शनकारियों ने सरकार विरोधी नारे लगाए तथा जंतर-मंतर पर युवाओं के साथ हुई कथित पुलिस कार्रवाई की निंदा की। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने कहा कि लोकतांत्रिक देश में शांतिपूर्ण तरीके से अपनी बात रखना प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक अधिकार है और युवाओं की आवाज को बल प्रयोग से दबाने का प्रयास उचित नहीं है। बाद में उन्होंने प्रशासनिक अधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। ज्ञान ज्योति सीनियर सैकेंडरी स्कूल कासनी में शनिवार को फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में नर्सरी से दूसरी कक्षा तक के विद्यार्थियों ने विभिन्न आकर्षक वेशभूषाओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में स्कूल निदेशक इंद्रजीत फौगाट, नीलम फौगाट व प्रिंसिपल सुनील शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार व प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित प्रतियोगिता के प्रतिभागी।

पुलिस ने चालकों को यूनिफॉर्म में ऑटो चलाने की हिदायत दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

यातायात व्यवस्था को अधिक सुरक्षित और अनुशासित बनाने के लिए झज्जर यातायात की ओर से अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में शनिवार को यातायात थाना प्रभारी सतीश कुमार की ओर से ऑटो चालकों को जागरूक किया गया। निरीक्षक सतीश कुमार ने कहा कि सभी ऑटो चालक निर्धारित यूनिफॉर्म पहनकर ही वाहन चलाएं, वाहन के आवश्यक दस्तावेज साथ रखें और यातायात नियमों का पूरी तरह पालन करें। ऑटो चालक सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनके व्यवहार से आमजन में व्यवस्था की छवि बनती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यात्रियों से सम्मानजनक व्यवहार किया जाए। अधिक किराया वसूलने, अभद्रता करने, लापरवाही से वाहन चलाने या अन्य नियमों के उल्लंघन की शिकायत मिलने पर संबंधित चालक के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने यूनिफॉर्म तैयार कराने और नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए चालकों को सीमित समय दिया है। बिना यूनिफॉर्म वाहन चलाने वाले तथा नियमों का उल्लंघन करने वाले चालकों के खिलाफ चालान सहित कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

बहादुरगढ़। ऑटो चालकों को जागरूक करते इंस्पेक्टर सतीश कुमार।

प्रवीन बने ग्रामीण ट्यूबवेल ऑपरेटर ऑर्गेनाइजेशन के जिला अध्यक्ष

- पदाधिकारियों ने संगठन की मजबूती पर बल देते हुए आगे की रणनीति पर चर्चा की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

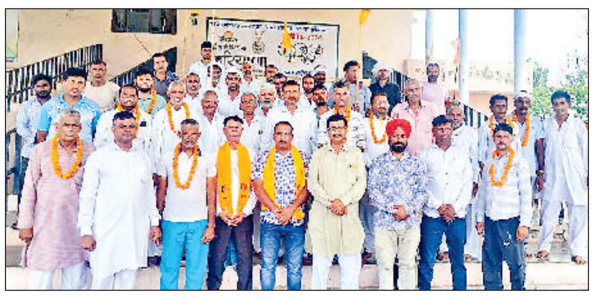

झज्जर। अधिवेशन में उपस्थित ग्रामीण ट्यूबवेल ऑपरेटर ऑर्गेनाइजेशन के सदस्य।

शनिवार को स्थानीय महर्षि दयानंद सरस्वती स्टेडियम में पब्लिक हेल्थ ग्रामीण ट्यूबवेल ऑपरेटर ऑर्गेनाइजेशन द्वारा एक अधिवेशन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारतीय मजदूर संघ ऑर्गेनाइजेशन के प्रदेशाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार कादियान, प्रदेश महामंत्री हुकम चंद सैनी, प्रदेश कोषाध्यक्ष बलविंदर, प्रदेश मीडिया प्रभारी ओंकार, जिला मंत्री धीरज जाखड़ तथा पब्लिक हेल्थ प्रदेश उपाध्यक्ष सुमित राठी ने मुख्य रूप से शिरकत की। इस दौरान वक्ताओं ने संगठन की मजबूती पर बल देते हुए सभी ग्रामीण ट्यूबवेल ऑपरेटर्स से एकजुट होकर कर्मचारी हितों की लड़ाई को मजबूत बनाने का आह्वान किया। इस दौरान सर्वसम्मति से प्रवीन कुमार को जिलाध्यक्ष, समे सिंह को जिला सचिव तथा अनिल कुमार को जिला कोषाध्यक्ष चुना की जिम्मेवारी सौंपी गई।

डीएवी स्कूल में सेवानिवृत्ति पर नरेश को दी यादगार विदाई

- नरेश कुमार ने अपने 31 वर्षों के सेवाकाल में सदैव निष्ठा, ईमानदारी और अनुशासन का परिचय दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। नरेश कुमार को यादगार विदाई देते डीएवी स्कूल के स्टाफ।

डीएवी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल में कर्मचारी नरेश कुमार की सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। मंच संचालन प्रेम व धारणा ने किया। विजय शैलानी, प्रेम, धारणा, दिव्या, शिवांगी और ईशा ने गीतों एवं भावपूर्ण शब्दों के माध्यम से नरेश कुमार के साथ बिताए अविस्मरणीय पलों को सांझा किया। प्राचार्य राजदीप कुलश्रेष्ठ ने कहा कि नरेश कुमार ने अपने 31 वर्षों के सेवाकाल में सदैव निष्ठा, ईमानदारी और अनुशासन के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन किया। उनके स्वस्थ, सुखी, समृद्ध एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामना की। इस मौके पर ब्रह्मजीत छिकारा, जयपाल दहिया, सतपाल वत्स, जयकरण, बिजेंद्र खोखर और हरिओम दलाल उपस्थित रहे।

झज्जर। हिंदी व अंग्रेजी कविता के विजेता प्रतिभागी।

कविता प्रतियोगिता में विद्यार्थियों में दिखा उत्साह

झज्जर। चंद्रबल मॉडर्न स्कूल में शनिवार को हिंदी, अंग्रेजी कविता व बाल गंगाधर तिलक प्रोजेक्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता परिणामों में निशांत, छवि, कार्तिक, पार्थ, तन्वी, अनिका, खनक, माही, दिशा, परी, अदिति और काव्या विजेता रहे। विद्यालय के संस्थापक एवं एमडीयू रोहतक के पूर्व कुलपति विवेक चन्द्र शर्मा ने सभी विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

खेड़ी खुम्मार के पूर्व सरपंच अत्तर सिंह यादव का निधन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

गांव खेड़ी खुम्मार के पूर्व सरपंच एवं भाजपा के पूर्व ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष अत्तर सिंह यादव का शनिवार को बीमारी के चलते निधन हो गया। वे पिछले काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। शनिवार को उनके पैतृक गांव खेड़ी खुम्मार में उनका अंतिम संस्कार किया गया, जहां बड़ी संख्या में ग्रामीणों, राजनीतिक हस्तियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उन्हें नम आंखों से अंतिम विदाई दी। इस मौके पर नप चेयरमैन जिले सिंह सैनी, यादव महासभा के प्रधान रामअवतार यादव, व्यापार मंडल के प्रधान केशव सिंघल, पार्षद प्रतिनिधि नवीन छाबड़ा, सैनी सभा के प्रधान रघुबीर सिंह सैनी सहित काफी संख्या में प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। बता दें कि अत्तर सिंह यादव क्षेत्र में अपनी सादगी, निष्ठा और मिलनसार स्वभाव के लिए पहचाने जाते थे। गांव के सरपंच रहते हुए उन्होंने खेड़ी खुम्मार के बुनियादी ढांचे और चौमुखी विकास के लिए अनेक उल्लेखनीय कार्य किए। इसके साथ ही भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष के रूप में उन्होंने संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और पिछड़े वर्ग के हितों की आवाज उठाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

बहादुरगढ़। रोचक गतिविधियों में हिस्सा लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

श्री स्वामी समर्थ स्कूल में हुईं रोचक गतिविधियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

लडरावण के श्री स्वामी समर्थ इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों के लिए थिंग बैलेंस, फन एक्टिविटी व स्नेक एक्टिविटी का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों ने संतुलन, एकाग्रता, टीमवर्क, रचनात्मकता, शारीरिक समन्वय तथा आत्मविश्वास का पाठ सीखा।

थिंग बैलेंस गतिविधि के माध्यम से बच्चों ने संतुलन और धैर्य का अभ्यास किया। फन एक्टिविटी ने बच्चों को सीखने के साथ-साथ मनोरंजन का अवसर प्रदान किया। स्नेक एक्टिविटी के माध्यम से विद्यार्थियों ने खेल-खेल में सहयोग, अनुशासन और त्वरित निर्णय लेने का अभ्यास किया। स्कूल चेयरमैन अभिषेक छिल्लर ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि ऐसी गतिविधियां बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

प्रधान का इस्तीफा छात्रों के संघर्ष की जीत

नरेश जून।

बहादुरगढ़। वरिष्ठ कांग्रेस नेता नरेश जून ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे को छात्रों के संघर्ष और लोकतांत्रिक आंदोलन की जीत बताया है। उन्होंने कहा कि सरकार काफी देर से सही, लेकिन आखिरकार छात्रों के दबाव और देशभर में उठी आवाज के आगे झुकी। यह फैसला उन लाखों छात्रों की जीत है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कांग्रेस के सभी वरिष्ठ नेताओं ने छात्रों के आंदोलन का लगातार समर्थन किया। कांग्रेस ने संसद के भीतर और सड़क पर छात्रों के मुद्दों को मजबूती से उठाया तथा उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ी।

बहादुरगढ़। बच्चों को योगाभ्यास कराते योगाचार्य जगदीश सहवाग।

लडरावण स्कूल में छात्रों को करवाया योगाभ्यास

बहादुरगढ़। शनिवार को गांव लडरावण के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा देशभक्ति एवं निःशुल्क योग-प्राणायाम शिविर का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. रवि धनखड़ ने की। कार्यक्रम में शिक्षक हरीश दहिया, ममता, अंजू, जयवीर, रेणु बाला, मीनाक्षी, इंदु, नरेंद्र, अनिल, रोबी, शीला, सोनिया, मूर्ति और अर्चना उपस्थित रहे। आचार्य जगदीश ने कहा कि योग से हमें आरोग्यता की प्राप्ति होती है। साथ ही विद्यार्थियों को कारगिल विजय दिवस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। सभी ने वीर शहीदों के अदम्य साहस को याद करते हुए सैनिकों की वीरता को नमन किया।

सूचना

मैं, अखिल गुलिया पुत्र राम चंद्र गांव बामनोला तहसील बादली, जिला झज्जर (हरियाणा) अपने बयान करता हूं कि मेरी दसवीं व बारहवीं कक्षा की मार्कशीट में मेरी मां का नाम अंजू गुलिया व पिता का नाम रामचंद्र गुलिया दर्ज है। जबकि मेरी मां का वास्तविक नाम अंजना (Anjana) और पिता का नाम राम चंद्र (Ram Chander) है। जो कि सही व दुरुस्त है।

खबर संक्षेप

स्वयंसेविकाओं ने दी सैनिकों को सलामी

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय की स्वयंसेविकाओं ने श्रद्धा, सम्मान एवं देशभक्ति की भावना के साथ कारगिल विजय दिवस मनाया। स्वयंसेविकाओं ने वीर शहीदों को सलामी दी तथा उनके अदम्य साहस, शौर्य एवं सर्वोच्च बलिदान को नमन किया। प्रिंसिपल डॉ. आशा शर्मा ने बताया कि 1999 में कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तान समर्थित घुसपैठ के बाद भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय चलाया। वीर सैनिकों ने कठिन परिस्थितियों में अदम्य साहस का परिचय देते हुए 26 जुलाई 1999 को भारत को विजय दिलाई। उनके अनुसार यह दिन प्रत्येक भारतीय के लिए राष्ट्रभक्ति, एकता एवं देश के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

दिल्ली हाइरॉक्स में तरुण दलाल ने जीता रजत पदक

बहादुरगढ़। दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित हाइरॉक्स प्रतियोगिता में बहादुरगढ़ रनर्स ग्रुप के दो खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। बीआरजी के तरुण दलाल ने 41-45 वर्ष आयु वर्ग की प्रो कैटेगरी में शानदार प्रदर्शन करते हुए दूसरा स्थान हासिल कर रजत पदक जीता। वहीं, राजेश रघुवंशी ने 55-59 वर्ष आयु वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पांचवां स्थान प्राप्त किया। बीआरजी के संस्थापक दीपक छिल्लर ने दोनों खिलाड़ियों को बधाई देते हुए बताया कि हाइरॉक्स को दुनिया की सबसे चुनौतीपूर्ण फिटनेस प्रतियोगिताओं में गिना जाता है।

स्कूलों व महाविद्यालयों में शहीदों को नमन, विद्यार्थियों ने देशभक्ति की प्रस्तुतियां दीं

जिलेभर में श्रद्धा, सम्मान व उत्साह से मनाया कारगिल विजय दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बाल विकास सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को कारगिल विजय दिवस उत्साह एवं देशभक्ति के माहौल में मनाया गया। विशेष कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने शानदार प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम की शुरुआत में कारगिल युद्ध में शहीद हुए वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, कविता, भाषण तथा अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से कारगिल के वीर जवानों के अदम्य साहस, त्याग और बलिदान को याद किया। स्कूल डायरेक्टर एडवोकेट प्रवीण छिल्लर और प्राचार्य डॉ पूनम चौधरी ने विद्यार्थियों को कारगिल युद्ध के इतिहास और भारतीय सेना के शौर्य से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि कारगिल विजय दिवस हमें देश के वीर सैनिकों के बलिदान को याद करने और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की प्रेरणा देता है।

बहादुरगढ़। कारगिल शहीदों को नमन करते बाल विकास स्कूल के विद्यार्थी।

विद्यार्थियों को दिखाई कारगिल युद्ध पर आधारित डॉक्यूमेंट्री

झज्जर। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में आठ हरियाणा बटालियन एनसीसी, रेवाड़ी के तत्वावधान में कारगिल विजय दिवस के अवसर पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता महाविद्यालय के पूर्व छात्र सेवानिवृत कर्नल योगेन्द्र सिंह रहे। कारगिल युद्ध पर आधारित डॉक्यूमेंट्री भी प्रदर्शित की गई, जिसमें कारगिल युद्ध की घटनाओं, हथियारों एवं सैन्य उपकरणों तथा ऑपरेशन विजय की महत्वपूर्ण उपलब्धियों का विवरण दिया गया। कर्नल योगेन्द्र सिंह ने कारगिल विजय दिवस के महत्व, युद्ध के कारणों तथा टाइगर हिल, तोलोलिंग, प्वाइंट 4875 सहित महत्वपूर्ण सामरिक चोटियों की भूमिका पर प्रकाश डाला और राष्ट्र प्रेम, अनुशासन, साहस तथा निस्वार्थ सेवा की भावना के लिए प्रेरित किया।

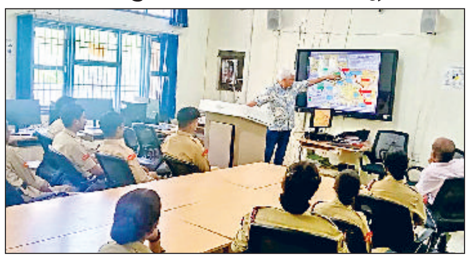
झज्जर। विद्यार्थियों को सामरिक चोटियों के विषय में बताते हुए सेवानिवृत्त कर्नल योगेंद्र सिंह।

देशभक्ति गीतों पर विद्यार्थियों ने बांधा समां

झज्जर। न्यूटन स्कूल में शनिवार को कारगिल दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक बालेश कादियान, मनोज भारद्वाज, अश्वनी खासा, प्रबंधक रोहताश सिंह व मुख्याध्यापिका उर्मिल बेनीवाल ने मां सरस्वती के सामने दीप प्रज्वलित व माल्यार्पण करके किया। विद्यार्थियों ने कार्यक्रम के दौरान अनेक देशभक्ति गीतों पर नृत्य की प्रस्तुति दी। स्कूल प्रबंधन द्वारा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

बहादुरगढ़। मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह का स्वागत करते अशोक मान व अन्य।

नीट परीक्षा में चूक पर सरकार ने तत्काल कार्रवाई की : इंद्राज

- दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मंत्री छात्र संघ प्रधान आर्यन मान के घर पहुंचे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

दिल्ली सरकार के मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह शनिवार को बहादुरगढ़ में दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के प्रधान आर्यन मान के निवास पर पहुंचे। यहां लोवा कलां सत्रह के प्रधान अशोक मान ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। रविंद्र इंद्राज ने कहा कि नीट परीक्षा में चूक जरूर हुई थी, लेकिन केंद्र सरकार ने तत्काल कार्रवाई की। दोषियों को गिरफ्तार किया और सफलतापूर्वक दोबारा परीक्षा भी करवाई गई। केंद्र सरकार ने युवाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी का ईमानदारी से निर्वहन किया है। दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह ने विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर भी अपनी बात रखी। प्रधान अशोक मान ने मंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि वरिष्ठ नेताओं का स्नेह और मार्गदर्शन समाज और राष्ट्रहित में बेहतर कार्य करने की प्रेरणा देता है। रविंद्र इंद्राज ने कहा कि जंतर-मंतर पर युवाओं का मंच नहीं, बल्कि देश को तोड़ने और अराजकता फैलाने वाले लोगों का मंच लगा हुआ है। इस मंच से देश के विकास के खिलाफ काम करने वाले लोग बेनकाब हो गए हैं।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर दलबीर मान, सिकंदर मान, पूर्व पार्षद युवराज छिल्लर, सनवीर दलाल, पप्पू दलाल, माल्हड़ पहलवान, अजीत सिंह, दीपक गौड़, कृष्ण जून, बल्लू राठी, नरेंद्र दलाल और राजेश पहलवान आदि मौजूद रहे।

नीट में कैंब्रिज स्कूल के सात विद्यार्थियों ने पाई सफलता

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना के सात विद्यार्थियों ने नीट परीक्षा में सफलता हासिल कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। स्कूल निदेशक धर्मेंद्र जून ने बताया कि छात्र अरविंद ने 581 अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंक 17,559 हासिल की। इनके अलावा सफल विद्यार्थियों में सेजल, कनिष्का, अंजलि, अनीशा, निशा व भारती शामिल हैं। उन्होंने सभी सफल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अंतरसदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में पटेल सदन प्रथम

झज्जर। होनहार प्रतिभागी विद्यालय स्टाफ सदस्यों के साथ।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को एच डी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में अंतरसदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें नौवीं से बारहवीं कक्षाओं के चारों सदनों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता में हिंदी प्राध्यापक कम समन्वयक सतबीर सिंह और अध्यापिका सुनीता जाखड़ ने निर्णायक की भूमिका निभाई। अनीता राणा ने मंच संचालन करते हुए बताया कि आज की अंतरसदनीय हिंदी वाद-विवाद स्पर्धा में सभी सदनों की टीमों ने समाज के ज्वलंत मुद्दों पर अपने मनोभावों को व्यक्त किया। जिसमें नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों में पटेल सदन की टीम खुशी और हिमांशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं कलाम सदन की वैशाली व नकुल की टीम ने द्वितीय और रमन सदन की स्वीटी व रिया की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ग्यारहवीं और बारहवीं के विद्यार्थियों में भी पटेल सदन की टीम रीतु व कार्तिक ने बाजी मारते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं रमन सदन की महक व दृष्टि की टीम ने द्वितीय और अटल सदन की लियांशी व निक्की की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एच डी ग्रुप सचिव विशाल नेहरा ने कहा कि वाद-विवाद प्रतियोगिता एक ऐसा सशक्त मंच है, जहां विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास, तार्किक चिंतन और आत्मविश्वास विकसित होता है।

बहादुरगढ़ में कैंसर विशेषज्ञ की ओपीडी शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

भागदौड़ भरे इस दौर में कैंसर सहित अन्य बीमारियां लगातार बढ़ रही हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक, बेहतर जीवन शैली और समय रहते उपचार से कैंसर पर नियंत्रण पाया जा सकता है। शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने लोगों को कैंसर के प्रति जागरूक किया।

दरअसली, द्वारका स्थित वेंकटेवश्वर हॉस्पिटल तथा सोनी न्यूरो एंड गैस्ट्रो हॉस्पिटल की ओर से शहर में कैंसर विशेषज्ञ ओपीडी की शुरुआत की गई है। शनिवार को ओपीडी की शुरुआत हुई। सोनी न्यूरो एंड गैस्ट्रो हॉस्पिटल में अब हर महीने के चौथे शनिवार को सुबह 11 से दोपहर डेढ़ बजे तक मरीजों को कैंसर संबंधी विशेषज्ञ परामर्श दिया जाएगा। ओपीडी में वेंकटेश्वर हॉस्पिटल के वरिष्ठ सलाहकार व मेडिकल ऑन्कोलॉजी के यूनिट हेड डॉ. मयंक अग्रवाल सेवाएं देंगे। मरीजों को कैंसर की जांच, उपचार योजना, सेकेंड ओपिनियन, अनुवांशिक कैंसर संबंधी सलाह दी जाएगी। जरूरत पड़ने पर उपचार भी दिया जाएगा।

बहादुरगढ़। कैंसर को लेकर जानकारी देते डॉ. मयंक अग्रवाल।

आप कार्यकर्ता सम्मेलन में संगठन का किया विस्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को चौधरी छोटूराम धर्मशाला में आम आदमी पार्टी कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें प्रदेशाध्यक्ष डॉक्टर सुशील गुप्ता ने शिरकत करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी ईमानदार राजनीति, पारदर्शिता और जनहित के मुद्दों के लिए निरंतर संघर्ष करती रहेगी। उन्होंने कार्यकर्ताओं से संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने, प्रत्येक घर तक पार्टी की नीतियों एवं जनहित के कार्यों को पहुंचाने तथा जनता की आवाज को मजबूती से उठाने का आह्वान किया। उन्होंने संगठन के विस्तार को गति देते हुए जिले में विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति की। उन्होंने प्रदीप धनखड़ को युवा जिलाध्यक्ष, डॉक्टर रविंद्र राज्याण एवं चंद्रमोहन को जिला प्रवक्ता, शैलेश कांगड़ा को एससी प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष, नरेश वाल्मीकि को एससी प्रकोष्ठ जिला उपाध्यक्ष, सुनील मातनहेल को एससी प्रकोष्ठ जिला सचिव, मंगल चौहान को जिला उपाध्यक्ष, हैप्पी लोहचब को जिला संगठन मंत्री, धर्मेंद्र पांचाल को ओबीसी प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष, सुरेंद्र को किसान प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष तथा एडवोकेट जोगेंद्र तंवर को लीगल सेल जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस अवसर पर अश्वनी दुल्हेड़ा, सुरेंद्र नागल, जिलाध्यक्ष हरीश कुमार, नीरज सिलाना, जसवंत मास्टर, सुमित्रा नागल, विकास दूहन, राकेश दूहन, संजय सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

झज्जर। सम्मेलन के दौरान उपस्थित आप प्रदेशाध्यक्ष डॉक्टर सुशील गुप्ता एवं अन्य पदाधिकारी।

पीडीएम में एआई पर हुई अंतर सदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

विरांश, अथर्व और ईशिका के प्रभावी तर्कों से जीती टीम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

पीडीएम पब्लिक स्कूल में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए चारों सदनों के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ-हानि, चुनौतियों, शिक्षा, रोजगार, नैतिकता तथा भविष्य में इसके प्रभाव से जुड़े सकारात्मक-नकारात्मक पक्षों पर प्रभावशाली एवं तार्किक विचार प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों के आत्मविश्वास, विषय की गहन समझ और प्रभावशाली वक्तृत्व कौशल ने सभी को प्रभावित किया। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए आर्यभट्ट सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेता टीम में विरांश (कक्षा 9), आर्या (कक्षा 10), अथर्व (कक्षा 11) तथा ईशिका (कक्षा 12) ने अपने प्रभावशाली तर्कों एवं उत्कृष्ट प्रस्तुति से निर्णायकों का मन मोह लिया। प्राचार्या डॉ. सुमन हुड्डा ने सभी प्रतिभागियों की सराहना करते हुए कहा कि वाद-विवाद प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, समसामयिक विषयों की समझ, प्रभावी अभिव्यक्ति तथा आत्मविश्वास का विकास करती हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों के उत्साह और तैयारी की प्रशंसा की तथा आर्यभट्ट सदन के विजेता विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। साथ ही उन्होंने अन्य सदनों के विद्यार्थियों को भी इसी उत्साह और लग्न के साथ आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया।

बहादुरगढ़। विजेता विद्यार्थियों के साथ प्रिंसिपल डॉ. सुमन हुड्डा।

शिविर में 45 युवाओं ने किया रक्तदान

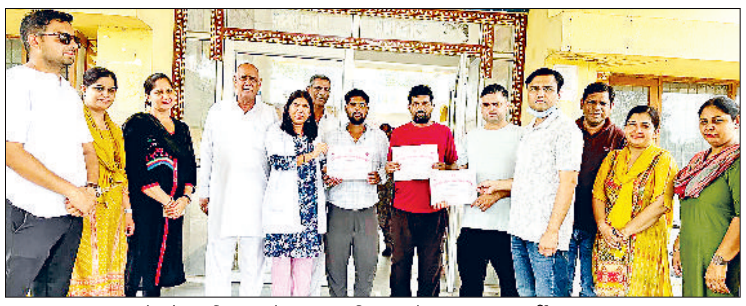
झज्जर। रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए स्वास्थ्यकर्मी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

क्षेत्र के गांव बरहाना स्थित पीएचसी में शनिवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर संचालक डॉक्टर अंकित ने बताया कि शिविर में रक्त एकत्रण का कार्य स्थानीय नागरिक अस्पताल के ब्लड सेंटर की टीम द्वारा किया गया। इस दौरान मुख्यातिथि के रूप में चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर रवि कुमार ने रक्तदाताओं को बैज लगाकर उनका उत्साह बढ़ाया। नर्सिंग अधिकारी कविता गुलिया ने बताया कि शिविर में कुल 45 युवाओं द्वारा रक्तदान किया गया। उन्होंने कहा कि रक्तदान महादान होता है। शिविर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा सभी रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। इस मौके पर धर्मपाल अहलावत, कृष्णचंद अहलावत, सुमन देशवाल, ममता, नरेश, अशोक, मीनाक्षी, प्रीति, राखी, तुलसा सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

स्कूलों, महाविद्यालयों और सामाजिक संगठनों ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधे लगाए

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधरोपण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

एक पेड़ मां के नाम अभियान को सार्थक करते हुए वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में पौधारोपण कार्यक्रम किया गया। बहादुरगढ़ शिक्षा सभा के प्रधान श्रीनिवास गुप्ता, कॉलेज महासचिव आशीष कुमार, कोषाध्यक्ष पवन कुमार अग्रवाल, जयभगवान लोहिया, मनोज, प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा, कार्यक्रम प्रभारी डॉ. नेहा नैन व डॉ. मंजीत आदि ने औषधीय पौधे रोपे। वक्ताओं ने कहा कि पर्यावरण संकट का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संकल्प से ही संभव है। हम प्रकृति और मां का ऋण कभी नहीं चुका सकते। पूर्व छात्रा गरिमा ने भी स्वयंसेविकाओं के साथ नीम, पीपल, बरगद, जामुन, अशोक, अमलतास और गुलमोहर जैसे छायादार एवं औषधीय पौधे लगाए।

बहादुरगढ़। वैश्य कॉलेज में पौधे लगाते प्रबंधक समिति व स्टॉफ सदस्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने बादली में किया पौधरोपण

बहादुरगढ़। आर्य समाज बादली द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रचार मंडल के प्रदेश अधिष्ठाता स्वामी सच्चिदानंद के नेतृत्व में बादली केएमपी के नजदीक सैकड़ों पौधे लगाए। इस अवसर पर जिला प्रधान आर्य हरिओ३म दलाल ने बताया कि वृक्ष धरती का अमूल्य आभूषण और मानव जीवन का आधार हैं। आर्य अजीत सिंह, जयपाल जेई, सहदेव, लीलूराम, कार्तिक, रमेश, कपिल, मनीष, बलराज, देवेंद्र, प्रवेश, ब्रह्मजीत आर्य, व्रतपाल राठी व जयकरण आर्य उपस्थित रहे।

शिक्षकों व विद्यार्थियों ने किया पौधरोपण

झज्जर। एलए सीनियर सेकेंडरी स्कूल में एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्कूल प्रोग्राम ऑफिसर मुकेश शर्मा के नेतृत्व में एनएसएस यूनिट के विद्यार्थियों ने मिलकर स्कूल प्रांगण में पौधे लगाए। विद्यार्थियों को वर्षा ऋतु में स्वयं पौधे लगाने व अन्य लोगों को भी जागरुक किया। करने के लिए प्रेरित किया गया। स्कूल प्राचार्या निधि कादियान, स्कूल प्रबंधक केएम डागर ने बताया कि स्कूल मेंजमेंट सदस्यों ने सभी अध्यापकों को अनेकों फलदार व छायादार पौधे भेंट किए।

आषाढ़ बीतने वाला है, सावन का महीना शुरू होने वाला है। रिमझिम फुहारों से भीगी हरी-भरी प्रकृति और मन को प्रफुल्लित करने का यह मौसम हमें आमंत्रित करता है कि आइए, एक बार फिर अपने बचपन में लौट जाएं। बारिश की फुहारों में तन मन को भिगो लें, अपनों के संग यादगार पल बिता लें, उनके साथ झूम लें। यकीन मानिए, ये पल आप कभी नहीं भूल पाएंगे।

आइए फिर बन जाएं बच्चे
रिमझिम बारिश का लें जी भर मजा

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

आधुनिक भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में अगर बारिश के मौसम का असली आनंद लेना है, तो हमें अपने भीतर के बचपन को फिर से जगाना होगा। यानी आने वाले सावन-भादो के दिनों का मजा लेने के लिए बन जाएं बच्चे, थोड़े से अक्ल के कच्चे। तर्क, समझदारी और दुनियादारी के बोझ को किनारे रखकर, एक बच्चे जैसी मासूमियत और बेफिक्री से इस मौसम को जीना सीख लें तो पूरे साल जीवन ऊर्जा से लबरेज रह सकते हैं।

समेट लें हर बूंद: बारिश के ये भीगे-भीगे दिन साल में एक बार आते हैं और हमें यह संदेश देते हैं कि जिंदगी सिर्फ काम करने, पैसे कमाने और जिम्मेदारियां निभाने का नाम ही नहीं है। इस मौसम के बहाने प्रकृति हमें खुलकर हंसने, भीगने और गाने का न्यौता देती है। इसलिए इन दिनों में अपनी सारी 'अक्लमंदी' को कुछ दिनों के लिए आराम करने भेज दीजिए। दिल से पूरी तरह 'बच्चे' बनिए और सावन-भादो की हर एक बूंद को अपने भीतर समेट लीजिए। क्योंकि समझदारी में भले ही सुरक्षा हो, पर असली आनंद तो बेफिक्री की मासूमियत में ही मिलती है।

तर्क छोड़ लें आनंद: बड़े होने पर हम हर चीज में नफा-नुकसान, सही-गलत और लॉजिक ढूंढ़ने लगते हैं। बारिश का यह मौसम तर्क का नहीं, बल्कि अहसास का उत्सव है। जब आसमान से बूंदें गिरती हैं, तो एक समझदार व्यक्ति कपड़े भीगने या बीमार पड़ने के डर से छतरी तान लेता है। इसके विपरीत, मासूम बच्चे बिना किसी बचाव के बारिश की बूंदों का मजा लेने लगते हैं। बारिश का असली मजा लेने के लिए पहली शर्त यही है कि हम कुछ समय के लिए अपनी प्रौढ़ उम्र की समझदारी को भूलकर प्रकृति के इस उपहार को स्वीकार करें।

भीगने का बेबाक उल्लास: छत पर जाकर या सड़कों पर बाहें फैलाकर आसमान से गिरती बूंदों को अपने चेहरे पर महसूस करना एक थेरेपी की तरह है। जब आप 'बच्चे' बन जाते हैं, तो आपको इस बात की परवाह नहीं होती कि लोग क्या कहेंगे या आपके जूते खराब हो जाएंगे। बारिश का पानी हमारे तन के साथ-साथ मन के तनाव को भी धो देता है। यह बेफिक्री ही बारिश को खास बनाती है।

कागज की कश्ती से दोस्ती: 'वो कागज की कश्ती, वो बारिश का पानी।' मशहूर शायर सुदर्शन फाकिर द्वारा लिखी यह बेहद खूबसूरत नज्म वर्षा ऋतु से जुड़ी यादों को सामने ले आती है। बचपन में घंटों बैठकर रंग-बिरंगे कागजों से नाव बनाना और उन्हें बहते पानी में छोड़ना एक अलग ही रोमांच देता था। जब नाव किसी बाधा को पार कर आगे निकल जाती, तो मन खुशी से झूम उठता था। क्यों न एक बार फिर बच्चा बनकर कागज की कश्ती को बहते पानी में बहाएं। महसूस करें कि छोटी-छोटी चीजों में कितनी बड़ी खुशियां छिपी होती हैं!

नहीं भूलेगी सोंधी महक: तपती गर्मी के बाद जब बारिश की पहली फुहार सूखी धरती पर पड़ती है, तो उससे उठने वाली सोंधी महक आत्मा को तृप्त कर देती है। बारिश में भीगते, मिट्टी में खेलने के दौरान बच्चे इस सोंधी महक से भी जुड़ जाते हैं। आज कंक्रीट के जंगलों और 'स्क्रीन टाइम' के दौर में, बारिश हमें वापस मिट्टी की ओर खींचता है। बिना चप्पल पहने हरी घास और गीली मिट्टी पर चलकर देखिए, यह अनुभूति आप भूल नहीं पाएंगे।

झूले पर पींग बढ़ाने का रोमांच: सावन-भादो के मौसम में पुराने समय में बाग-बगीचों में पेड़ों की डालियों पर रस्सियों के झूले डाले जाते थे। किशोरियां और महिलाएं मिलकर लोकगीत गाती थीं और आसमान छूने की होड़ में पींग बढ़ाती थीं। हवा के झोंकों के साथ ऊपर जाना और फिर तेजी से नीचे आना, दिल की धड़कनों को बढ़ा देता था। आज भले ही वो बाग कम हो गए हों, लेकिन किसी पार्क में या घर की बालकनी में एक छोटा-सा झूला डालकर भीगी हवाओं का आनंद लिया ही जा सकता है। इससे हमारे भीतर का बाल-मन जीवंत हो उठेगा।

फायदेमंद है अक्ल का कच्चापन: 'अक्ल का कच्चा' होने का मतलब मूर्ख होना नहीं, बल्कि 'ओवरथिंकिंग' से मुक्त होना है। बारिश की बूंदें हमसे कहती हैं कि इस पल में जियो। जैसे बच्चे को कल की चिंता नहीं होती, वैसे ही कुछ घंटों के लिए अपनी अक्ल और चिंताओं को ताले में बंद कर देना ही आनंद मार्ग का दरवाजा खोलता है।

लजीज पकवानों का लें मजा: रसोई से घेवर, मालपुए, मूंगदाल के चीले, गरमा-गरम पकोड़े और अदरक वाली चाय की खुशबू, बारिश के मौसम का लुत्फ और बढ़ा देती है। अगर आप समझदार बने रहेंगे तो हमेशा कैलोरी, डाइट और फैट के हिसाब-किताब में उलझे रहेंगे। लेकिन बारिश का मजा तो तब आएगा, जब आप बच्चे की तरह बिना किसी गिल्ट के लजीज व्यंजनों का स्वाद लेंगे।

हरियाली को निहारने का सुख: एक बच्चा प्रकृति के इस बदलाव को बड़े कौतूहल से देखता है। पत्तियों पर अटकी बूंदें, रेंगते हुए छोटे कीट और इंद्रधनुष उसे मोहित कर देते हैं। जब हम एक बच्चे की विस्मय भरी नजरों से इस हरियाली को देखते हैं, तो हमें भी हर शय आकर्षक लगने लगती है। *

गीत-संगीत के संग थिरकन

बारिश सिर्फ देखने या छूने का नहीं, बल्कि सुनने का भी मौसम है। बादलों की गड़गड़ाहट, मेंढकों की टर्र-टर्र, झींगुरों की आवाज और पत्तियों पर गिरती बूंदों का अपना एक संगीत होता है। इसके साथ ही, लोकगीतों और कजरी की परंपरा इस मौसम को संगीतमय बनाती है। कुछ पल के लिए जब आप बच्चे बनते हैं, तो झिझक छोड़कर संगीत की धुन पर अपने परिजन या दोस्तों के संग झूम उठते हैं। बारिश के गानों पर जी भर झूमना या नाचना, मन के भीतर दबे हुए सारे गुबार को बाहर निकाल देता है।

संगीत-कला-मनोरंजन के साथ
सुधरे स्वास्थ्य-बढ़े आयु

अगर आप लंबे समय तक स्वस्थ रहना चाहते हैं, अपनी मेमोरी, सुकून और आयु बढ़ाना चाहते हैं तो अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय अपने मनोरंजन के लिए निकालिए। कला और संगीत का जीवन पर कैसा सकारात्मक असर पड़ता है, इसका खुलासा हाल में एक स्टडी में हुआ है।

लाइफस्टाइल
अंजू जैन

अगली बार जब आप अपने साप्ताहिक बजट या वीकेंड की योजना बनाएं, तो उसमें केवल मॉल जाने या रेस्टोरेंट में खाना खाने के कार्यक्रम न रखें, बल्कि किसी स्थानीय कला प्रदर्शनी का टिकट लें, किसी नाटक के दर्शक बनें या लाइव संगीत की महफिल का हिस्सा बनें। इससे आपके स्वास्थ्य और जीवन पर सकारात्मक असर पड़ेगा।

क्या कहती है स्टडी: वैज्ञानिकों द्वारा किया गया अध्ययन इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि कला कोई विलासिता नहीं, बल्कि दीर्घायु और स्वस्थ जीवन के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। जाहिर है, कला पर खर्च किया गया आपका समय और पैसा केवल मनोरंजन पर नहीं, बल्कि आपके जीवन के कीमती और स्वस्थ वर्षों को बढ़ाने पर निवेश है। सीधी-सी बात है कि कला से जुड़िए और लंबी उम्र पाइए।

स्टडी का तरीका: जापान के नेशनल सेंटर फॉर जेरियाट्रिक्स एंड जेरोंटोलॉजी और यूके के शोधकर्ताओं ने लगभग 10 से अधिक वर्षों तक हजारों वयस्कों के जीवन चक्र और उनकी सांस्कृतिक आदतों का विश्लेषण किया। वैज्ञानिकों ने डीएनए प्रणालियों और कोशिकाओं के बूढ़े होने की गति को मापा। इस शोध से जो बातें सामने आईं, उनसे यह साबित हुआ है कि सिनेमा, संगीत कार्यक्रम और कला प्रदर्शनियों में भाग लेने से इंसान की जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। नियमित रूप से सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रहने वाले लोगों की उम्र न केवल लंबी होती है, बल्कि उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी काफी बेहतर रहता है। इस शोध में शामिल वैज्ञानिकों ने पाया कि जो लोग सप्ताह में कम से कम एक बार किसी सांस्कृतिक गतिविधि (जैसे फिल्म, नाटक या संगीत) का हिस्सा बनते हैं, उनकी जैविक उम्र न जाने वालों की तुलना में लगभग एक वर्ष कम पाई गई। कलात्मक गतिविधियों में सक्रियता से शरीर के बूढ़े होने की वार्षिक दर में करीब 4 प्रतिशत तक की गिरावट देखी गई है। जापान दुनिया में सबसे अधिक औसत आयु वाले देशों में शीर्ष पर है, जिसका एक बड़ा कारण वहां की जीवनशैली है। जब बुजुर्ग या वयस्क किसी पेंटिंग, प्रदर्शनी या लाइव कॉन्सर्ट में जाते हैं, तो उन्हें न केवल मानसिक संतोष मिलता है, बल्कि वे समाज के अन्य लोगों से भी जुड़ते हैं।

व्यायाम जैसा प्रभाव: वैज्ञानिकों का मानना है कि नियमित रूप से कला दीर्घाओं या संगीत समारोहों में जाना शरीर पर उतना ही सकारात्मक जैविक प्रभाव डालता है, जितना कि नियमित व्यायाम करना या धूम्रपान/शराब जैसी लत को छोड़ना।

शारीरिक-मानसिक तंत्र पर प्रभाव: यह शोध केवल सतही आंकड़ों पर आधारित नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहरा न्यूरोलॉजिकल और बायोलॉजिकल विज्ञान काम करता है। जब हम किसी मूवी, म्यूजिक कंसर्ट या आर्ट एग्जीबिशन का हिस्सा बनते हैं, तो हमारे शरीर में कई बदलाव होते हैं। जैसे- कलात्मक माहौल में समय बिताने से मस्तिष्क में तनाव पैदा करने वाले हार्मोन 'कोर्टिसोल' का स्तर तुरंत गिर जाता है। इससे हृदय स्वास्थ्य बेहतर होता है और असमय आने वाले हार्ट अटैक का खतरा कम होता है। म्यूजिक कंसर्ट की धुनें या किसी फिल्म की सम्मोहक कहानी हमारे मस्तिष्क में डोपामाइन, ऑक्सीटोसिन और एंडोर्फिन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर को रिलीज करती हैं। ये हार्मोन दर्द कम करते हैं, मूड बेहतर बनाते हैं और शरीर में हीलिंग की प्रक्रिया को तेज करते हैं। उम्र बढ़ने और अंगों के खराब होने का बड़ा कारण शरीर के अंदरूनी हिस्सों में होने वाली सूजन है। जो लोग कलात्मक अभिव्यक्तियों से जुड़े, उनके शरीर में 'साइटोकिंस' (सूजन बढ़ाने वाले प्रोटीन) का स्तर कम पाया गया, जिससे इम्यून सिस्टम मजबूत बना रहता है।

अकेलापन वृद्ध अवस्था में एक साइलेंट किलर की तरह काम करता है। थिएटर और कंसर्ट हॉल जैसे सार्वजनिक स्थान लोगों को एक साझा मंच प्रदान करते हैं, जिससे सामाजिक अलगाव खत्म होता है और जीवन जीने की इच्छा मजबूत होती है। *

गीत
प्रो. शरद नारायण खरे

बरखा की बहार

ताल-तलैयां रीत गए थे नदियां भी थीं सूखी।
बुझा-बुझा मन रहता था और काया भी थी रूखी।।
बरखा की बूंदों से पर अब, मिला खुशी का खत है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।
कंठ शुष्क थे, जी घुटता था, बेचैनी मुस्काती।
सारा आलम व्यथित हुआ था, सांसें भी थम जाती
हरियाली धरती पर बिखरी, लगता सुखद सतत है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।
स्वेद बहा करता था निशिदिन पर अब जल साथी है।
आसमान से अमिय बरसता, हर शय अब गाती है।।
मौसम तो मनभावन लगता, हर पल उल्लासित है
बहुत दिनों के बाद सभी की, खिली-खिली तबियत है।।
बूंदें लाईं नवल संदेशे, अमन-चैन के मेले।
बच्चे नाव चलाते जल में, लिए हर्ष के रेले।।
जीवन को नवरूप मिला, कृषक हुआ आनंदित है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।

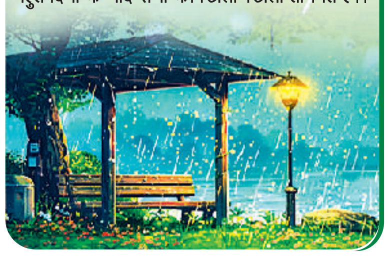

लघुकथा / संजय मृदुल

गुरु दक्षिणा

रमा ने दरवाजा खोला तो सामने एक नौजवान खड़ा था। असमंजस से डूबे हुए स्वर में रमा ने पूछा, 'जी कहिए, किससे मिलना है आपको?'

'अरे रमा आंटी! पहचाना नहीं मैं हूं रिंटू! कई साल पहले यहीं आपके पड़ोस में रहते थे ना हम।' कहकर रिंटू चुप हो गया।

'अरे हां, रिंटू! इतने सालों बाद तुम्हें यूं देखकर थोड़ी हैरान हो गई थी मैं।' रमा को याद आया तो मुस्कुराते हुए उसका हाथ पकड़ भीतर ले आई। रमा अतीत को याद करने लगी। रिंटू के पिता सरकारी कर्मचारी थे। कई साल पहले ट्रांसफर से यहां पड़ोस में रहने आए थे। दो तीन साल रहकर फिर और किसी शहर में चले गए थे।

'तुम अचानक यहां कैसे बेटा? और तुम्हे हम, ये घर याद था अब तक?' रमा ने रिंटू से प्रश्न किया। 'जी आंटी! मेरी बैंक में नौकरी लगी है और पहली पोस्टिंग इसी शहर में मिली है। कुछ दिन पहले ही आया हूं यहां। मां ने याद दिलाया कि आपसे जरूर मिलना। वैसे भी आंटी, भूलने का तो सवाल ही नहीं उठता आपको। आपकी वजह से तो आज मैं यहां तक पहुंचा हूं। आप की दी हुई सीख भूल चुका होता तो पापा की तरह शराबी, जुआरी हो गया होता।'

रमा को बिसरा हुआ सब याद आने लगा। रिंटू के पिता आदतन शराबी थे। करेला और नीम चढ़ा यह कि जुए का भी जबरदस्त नशा था। आए दिन घर पर महाभारत होता। रिंटू की मां भी परिस्थितियों के कारण गुस्सैल हो गई थी। रोज-रोज की मारपीट, झगड़े ने रिंटू का बचपन छीन लिया था। जैसे ही शाम होती वो भागकर रमा के घर आ जाता। जब तक उसके पिता की आवाज आनी बंद नहीं होती, तब तक उन्हीं के पास दुबका रहता। रमा को भी उस नन्हे बच्चे पर तरस आता। उसे खाने को देती, पढ़ाती, नई बातें सिखाती।

'क्या सोचने लगी आंटी? मैं आपसे ही मिलने आया हूं। आज गुरु पूर्णिमा भी है तो और कभी इससे शुभ मुहूर्त नहीं मिलता आपसे मिलने आपका आशीर्वाद लेने का।' रिंटू की बात सुनकर रमा वर्तमान में लौट आई। रिंटू को इस तरह खुश और विश्वास से भरा हुआ देखकर उसे अच्छा लग रहा था।

'घर में सब कैसे हैं रिंटू?' रमा ने रिंटू से पूछा। 'सब कौन आंटी? मैं और मां ही हैं। पापा तो कुछ साल पहले चल बसे। उनकी जगह मां को नौकरी मिल गई।' कुछ ठहरकर रिंटू फिर बोला, 'याद है आंटी, जब मैं रोज आपके यहां आकर छुपता था, आप कितना समझाती थीं मुझे। जब हम शहर छोड़कर जाने वाले थे आपने एक बात कही थी उसी बात ने मुझे आज यह मुकाम दिया है।'

'ऐसा क्या कहा था मैंने? मुझे तो याद नहीं।' रमा ने सवाल किया।

'हमारे घर की हालत तो आपको याद होगी। जब हम शहर छोड़कर जाने वाले थे, तब आपने मुझसे कहा था- रिंटू! कमल केवल कीचड़ में ही खिलता है। तुम्हारे घर के हालात कितने भी खराब हों तुम कभी अपने पापा की तरह बनने की सोचना भी मत। हमेशा सोचना कि कैसे इनके तरह ना बनूं? खूब पढ़ना, मेहनत करना, अपनी मां को सारी खुशियां देना। देखना एक दिन तुम्हारे पापा भी समझ जाएंगे सुधर जाएंगे। बस सब्र रखना। ...और आंटी जी, मैंने आपकी बात को गांठ बांध लिया। जितनी भी मुश्किल आई, हार नहीं माना। घर में जितना भी माहौल खराब रहा, मां को समझाता रहा कि एक दिन सब अच्छा हो जाएगा। और देखिए आज मैं एक अच्छी नौकरी पर हूं। बस दुःख यही है कि पापा नहीं है। उन्हें भी खुशी तो होती आज।' रिंटू भावुक हो गया। 'बिल्कुल होती बेटा। कौन सा बाप बेटे की सफलता पर खुश नहीं होता। भले ही उन्होंने कितने गलत काम किए...' रमा बोली। 'जी आंटी। आपने जो भी सिखाया था उसी का यह परिणाम है।' कहते हुए रिंटू ने अपने बैग में से कुछ सामान निकाला, 'ये मेरी तरफ से कुछ भेंट है, मेरी तरफ से गुरु दक्षिणा मान कर स्वीकार कर लीजिए।' रमा की आंखों में आंसू झिलमिला उठे। स्नेह से रिंटू के सिर पर हाथ फेरा। वाकई कीचड़ में कमल खिलते देख लिया था उसने। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

समय-समाज की कहानियां

गत वर्ष दिवंगत हुए प्रखर कथाकार अवधेश प्रीत की नई कहानियों के संग्रह 'मिनी और अन्य कहानियां' में बारह कहानियां संकलित हैं। इन कहानियों में जहां एक ओर लेखक की वह गहन दृष्टि नजर आती है, जिससे वे अपने समय में होने वाले विचलन को लक्षित करते हैं, साथ ही राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों को लेकर उनकी प्रतिबद्धता भी प्रकट होती है। शीर्षक कहानी 'मिनी' का फलक अत्यंत विस्तृत है, जिसमें मीडिया की भूमिका, लोगों के चारित्रिक क्षरण और स्त्री चेतना को स्वर दिया गया है। 'ये शरीफ लोग' कहानी हमारे समय की राजनीति और समाज के उस स्याह यथार्थ को सामने लाती है, जिसमें एक स्त्री भरपूर संकल्प के साथ संघर्ष के लिए कदम तो बढ़ाती है लेकिन लोगों के संबल के अभाव में हार मान लेती है। 'बारिश' कहानी आम इंसान के रोजमर्रा के खटराग और उसके अंतर्द्वंद्व को सामने लाती है। 'कॉफी' एक वृद्ध दंपती की भावनाओं और उनके अतीत की स्मृतियों को व्यक्त करती है तो 'उस मोड़ का अफसाना' अपने-अपने दांपत्य जीवन से आबद्ध दो सहेलियों के अतीत और वर्तमान प्रेम संबंध की कोमल-खुरदरी अनुभूतियों को पूरी भावुकता से स्वर देती है। पठनीयता से भरपूर और भाषा में स्थानीयता की सोंधी गंध लिए ये कहानियां, आत्मविवेचन के लिए भी प्रेरित करती हैं। *

किताब: मिनी और अन्य कहानियां(कहानी-संग्रह), **लेखक:** अवधेश प्रीत, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सीजनल ट्रैवलिंग / समीर चौधरी

जुलाई-अगस्त के महीनों में जहां देश के अधिकांश हिस्से बारिश से सराबोर रहते हैं, वहीं कुछ खूबसूरत पर्यटन स्थल, इस मौसम में और भी मोहक और आकर्षक हो जाते हैं। कहीं फूलों की घाटियां खिल उठती हैं, तो कहीं झरने, जंगल, पहाड़ और धुंध पर्यटकों को शानदार अनुभव प्रदान करते हैं। यहां देश के ऐसे ही कुछ शानदार मानसून ट्रैवल डेस्टिनेशंस के बारे में बता रहे हैं।

मानसून में घुमक्कड़ी के लिए बेस्ट ये अमेजिंग ट्रैवल डेस्टिनेशंस

हरियाली से ढंकी वादियों वाला कुर्ग

कर्नाटक राज्य में स्थित कुर्ग, दक्षिण भारत का सबसे विख्यात मानसून ट्रैवल डेस्टिनेशन है। जुलाई-अगस्त के महीने में यह स्थान कोहरे से ढंके कॉफी प्लांटेशनों, पानी से भरे झरनों और हरे-भरे जंगलों में तब्दील हो जाता है। इन्हीं महीनों में ही यहां कक्काडा का कोडव माह भी पड़ता है, जब बांस, जंगली मशरूम और मेडिसिनल यूज वाली मड्डु थोप्पु पत्तियां, स्थानीय व्यंजनों का हिस्सा बन जाती हैं। आप यहां पहाड़ों में लॉन्ग ड्राइव करते हुए ऐबी फाल्स, राजा की सीट और दुबारे एलीफैंट कैंप पर रुक सकते हैं या प्लांटेशन स्टे में रहकर बारिश का आनंद ले सकते हैं। *

शांत-मनमोहक हिल स्टेशन भंडारदरा

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित एक बेहद खूबसूरत और शांत हिल स्टेशन है भंडारदरा। यह सह्याद्री की पहाड़ियों में प्रवारा नदी के किनारे बसा हुआ है और अपने शानदार झरनों, प्राचीन किलों और हरी-भरी वादियों के लिए जाना जाता है। यह मुंबई से लगभग 185 किलोमीटर दूर है। सड़क मार्ग से गाड़ी द्वारा यहां पहुंचने में करीब 4 से 4.5 घंटे का समय लगता है। यहां के प्रमुख आकर्षणों में से एक विल्सन डैम, प्रवारा नदी पर बना भारत के सबसे पुराने बांधों में से एक है। बारिश के मौसम में विल्सन डैम से गिरता हुआ पानी बिल्कुल छतरी जैसा आकार बनाता है, इसीलिए इसे अंब्रेला फॉल कहते हैं। यहां स्थित रंधा फॉल को 'इंडियन नियाग्रा फॉल्स' भी कहा जाता है, जो एक गहरी खाई में लगभग 170 फीट की ऊंचाई से गिरता है। इस धुंध भरे मौसम में भंडारदरा में कैंपिंग का भरपूर आनंद ले सकते हैं। *

हिमालय की गोद में बसी फूलों की घाटी

जुलाई-अगस्त में उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित फूलों की घाटी, जो कि यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज में लिस्टेड है, भी खिलने लगती है। हजारों अल्पाइन फूल पश्चिम हिमालय की गोद में बसी इस वादी को रंगों के इंद्रधनुष में बदल देते हैं। यह खूबसूरत घाटी साल में सीमित समय (1 जून से 31 अक्टूबर) के लिए ही खुलती है क्योंकि यह अधिकतर समय बर्फ से ढंकी रहती है। फूलों की घाटी की सैर करते हुए आप हेमकुंड साहिब भी जा सकते हैं जो एक सिख धर्मावलंबियों का तीर्थ स्थल है और इसी मौसम में दर्शन के लिए खुलता है। *

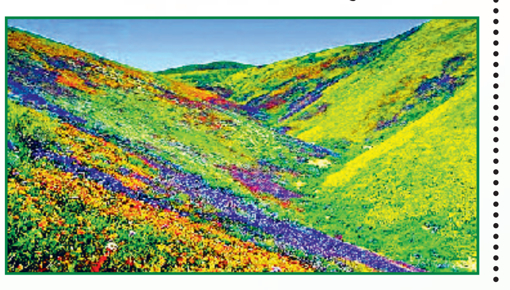

सुंदर-मनमोहक लैंडस्केप तवांग

अरुणाचल प्रदेश में तवांग की यात्रा करने के लिए भी सबसे अच्छा महीना जुलाई-अगस्त ही है। ऊंचाई पर बसे इस शहर में तापमान ठंडा रहता है और हरे-भरे पहाड़ी लैंडस्केप आकर्षित करते हैं। सेला पास, माधुरी झील और बुम-ला का कुदरती सौंदर्य आप कभी नहीं भूल पाएंगे। अगर मौसम खराब न हो तो कुछ समय 17वीं शताब्दी में निर्मित तवांग मठ में भी अवश्य गुजारें। यह भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। इसके साथ ही यहां फूलों भरी घाटियां और घुमावदार ग्लेशियर झीलें भी दर्शनीय हैं। *

जन्नत जैसा लाहौल-स्पीति

हिमाचल प्रदेश में पहले लाहौल और स्पीति के रूप में दो अलग-अलग जिले थे, लेकिन अब इन्हें मिलाकर एक जिला लाहौल-स्पीति कर दिया गया है। जुलाई के महीने में इस क्षेत्र में पर्यटकों के आने का सिलसिला शुरू हो जाता है, क्योंकि बर्फ पिघलना आरंभ हो जाती है और सड़कों पर चलना संभव हो जाता है। एडवेंचर पसंद करने वालों, प्रकृति प्रेमियों और शहरी जीवन की तेजी व शोर-शराबे से बचने वालों के लिए लाहौल-स्पीति जुलाई-अगस्त के महीनों में जन्नत जैसा हो जाता है। इस समय मौसम इतना सुहावना होता है कि ठंड का एहसास तक नहीं होता और गर्मी लगने का तो सवाल ही नहीं उठता है। सबसे अच्छी बात यह है कि लाहौल-स्पीति, रेन शैडो एरिया है, जिसका अर्थ है कि यहां जुलाई में न के बराबर बारिश पड़ती है, इसलिए जब देश के बाकी हिस्सों में मानसून अपने चरम पर होता है तो उससे बचने के लिए लाहौल-स्पीति में आनंदमय शरण ली जा सकती है। *

कांवड़ यात्रा शिवभक्ति के साथ संकल्प-श्रद्धा की पावन यात्रा

कंधों पर कांवड़, पैरों में छाले और जुबां पर सिर्फ एक ही उद्घोष- हर-हर महादेव। सावन आते ही सड़कों पर उमड़ता आस्था का यह जनसैलाब, सदियों पुरानी उस परंपरा की कहानी कहता है, जहां आस्था, त्याग और शिवभक्ति साथ-साथ चलते हैं।

आस्था / शिखर चंद जैन

शिव आराधना का सबसे पावन और कठिन अनुष्ठान है कांवड़ यात्रा। श्रावण मास की शुरुआत से ही चारों ओर 'बम-बम भोले', 'बोल बम' और 'हर-हर महादेव' की गूंज सुनाई देने लगती है। केसरिया वस्त्र पहने लाखों श्रद्धालु कांवड़िए पवित्र नदियों से जल भरकर पैदल यात्रा करते हैं और शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। कांवड़ यात्रा केवल एक धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि अगाध श्रद्धा, मानसिक संकल्प और शारीरिक सहिष्णुता का जीवंत प्रतीक है। ऊंच-नीच के भेदभाव को भुलाकर, केवल शिव भक्ति में लीन होकर एक ही दिशा में कदम बढ़ाना इस यात्रा को अलौकिक और अद्वितीय बनाता है।

कांवड़ यात्रा की शुरुआत: कांवड़ यात्रा की शुरुआत को लेकर कई धार्मिक-पौराणिक कथाएं एवं मान्यताएं प्रचलित हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार परशुराम जी को सबसे पहला कांवड़िया माना जाता है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के बागपत के पास 'पुरा महादेव' नाम के दिव्य शिवलिंग की स्थापना की थी। परशुराम जी ने गढ़मुक्तेश्वर से पवित्र गंगाजल लाकर इस शिवलिंग पर जलाभिषेक किया था। उस समय श्रावण मास चल रहा था। तभी से इस परंपरा की शुरुआत मानी जाती है। एक अन्य कथा के अनुसार, समुद्र मंथन के समय जब हलाहल विष निकला, तो ब्रह्मांड को बचाने के लिए भगवान शिव ने उसे अपने कंठ में धारण कर लिया। विष के प्रभाव से शिव जी का कंठ नीला पड़ गया और उनका शरीर तपने लगा। शिव जी के शरीर की जलन को शांत करने के लिए सभी देवताओं ने उन पर पवित्र नदियों का जल चढ़ाया। रावण द्वारा वैद्यनाथ धाम में गंगाजल लाकर शिव जी को अर्पित करने की कथा भी प्रचलित है।

कांवड़ यात्रा की महत्ता: यात्रा के दौरान कांवड़िए मांस, मदिरा, तामसिक भोजन और अपशब्दों से पूरी तरह दूर रहते हैं। बिना जूते-चप्पल के पैदल चलना सहनशीलता सिखाता है। मान्यता है कि जो भक्त सच्चे मन से गंगाजल लाकर शिव जी का अभिषेक करता है, उसकी सभी सांसारिक बाधाएं दूर हो जाती हैं और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

कई प्रकार की कांवड़ यात्राएं

सामान्य कांवड़: इसमें कांवड़िए आराम से यात्रा करते हैं। वे रास्ते में बने शिविरों में रुक सकते हैं, भोजन कर सकते हैं और सो सकते हैं। रुकने के दौरान कांवड़ को स्टैंड या पेड़ पर टांगा जाता है।

डाक कांवड़: इसमें जल भरने के बाद कांवड़िया बिना रुके लगातार दौड़ता या तेज चलता है। यदि कोई डाक कांवड़िया थक जाता है, तो उसकी टीम का दूसरा सदस्य कांवड़ लेकर दौड़ना शुरू करता है।

खड़ी कांवड़: इस यात्रा में कांवड़ को हमेशा गति में रखना होता है। यदि कांवड़िया आराम करता है, सोता है तो उसकी जगह किसी दूसरे सहयोगी को कांवड़ को अपने कंधे पर लेकर खड़े रहना या चलना पड़ता है।

दंडी कांवड़: इसमें श्रद्धालु नदी से जल भरने के बाद शिव मंदिर तक की पूरी दूरी साष्टांग प्रणाम करते हुए पूरी करते हैं। इस यात्रा को पूरा करने में हफ्तों या महीनों का समय लग जाता है।

प्रसिद्ध कांवड़ यात्राएं: भारत में दो सबसे बड़ी कांवड़ यात्राएं आयोजित होती हैं। पहली हरिद्वार यात्रा, जिसमें श्रद्धालु हरिद्वार, ऋषिकेश या गौमुख से गंगाजल भरते हैं। ये श्रद्धालु वापस आकर अपने स्थानीय शिव मंदिरों में जल चढ़ाते हैं। दूसरी सुल्तानगंज से देवघर तक की यात्रा। इस यात्रा में श्रद्धालु सुल्तानगंज से उत्तरवाहिनी गंगा का जल लेते हैं और देवघर स्थित वैद्यनाथ धाम में ज्योतिर्लिंग पर जल अर्पित करते हैं। *

भूमिका / शैलेंद्र सिंह

जंगलों के नायक-रक्षक फॉरेस्ट रेंजर

जंगली जानवरों ही नहीं वन संपदा की सुरक्षा करने और उन्हें संवर्धित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका फॉरेस्ट रेंजर्स की होती है। ये किस-किस तरह की भूमिकाएं निभाते हैं, इस बारे में आपको भी जानना चाहिए।

जब भी भारत के बाघों की बढ़ती संख्या, एशियाई शेरों और काजीरंगा के गैंडों की सुरक्षा या हाथियों के संरक्षण की बात होती है, तो सुर्खियों में अकसर राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य और सरकारी योजनाएं होती हैं। लेकिन इन सफलताओं के पीछे ऐसे हजारों चेहरे भी होते हैं, जिनका नाम शायद ही कभी सुर्खियां बनता हो। ये हैं हमारे फॉरेस्ट रेंजर और फ्रंट लाइन वन सुरक्षाकर्मी। ये वो लोग होते हैं, जो हर मौसम, हर परिस्थिति और हर खतरे के बीच जंगलों की रक्षा में दिन-रात डटे रहते हैं। यही कारण है कि 31 जुलाई को मनाया जाने वाला विश्व रेंजर दिवस केवल एक औपचारिक दिवस भर नहीं है, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

निभाते हैं कई भूमिकाएं: वन या फॉरेस्ट रेंजर का काम केवल जंगल में गश्त लगाना भर नहीं है, उसकी जिम्मेदारी वास्तव में किसी एक विभाग तक सीमित नहीं है। उन्हें वन्यजीवों की सुरक्षा करनी पड़ती है, अवैध शिकार पर नजर रखनी होती है, लकड़ी की तस्करी रोकनी होती है, जंगल में लगने वाली आग पर नियंत्रण पाना होता है, मानव-वन्यजीव संघर्ष की स्थिति में लोगों और जानवरों दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होती है और कई बार घायल वन्यजीवों के बचाव अभियान में भी हिस्सा लेना पड़ता है। मतलब यह एक ऐसी नौकरी है, जिसमें हर दिन एक नहीं बल्कि कई तरह की चुनौतियों से निपटना होता है।

कठिनाइयों में निभाते दायित्व: एक वन रेंजर का दिन अकसर सूर्योदय से पहले शुरू हो जाता है। वह कई किलोमीटर तक पैदल गश्त करता है। दुर्गम पहाड़ियों पर चढ़ाई करता है। घने जंगलों में घंटों तक निगरानी करता है और रात में भी सतर्क रहना पड़ता है। यह सब उसके काम का हिस्सा है। बरसात, भीषण गर्मी या कड़ाके की ठंड, प्रकृति का कोई भी मौसम उसकी जिम्मेदारी को कम नहीं करता बल्कि कई बार उसे ऐसे इलाकों में काम करना पड़ता है, जहां मोबाइल नेटवर्क तक काम नहीं करता।

हर क्षेत्र में सक्रिय: निःसंदेह आज भारत दुनिया का सबसे ज्यादा जंगली बाघों वाला देश है। लेकिन यह उपलब्धि केवल सरकारी नीतियां बना देने भर का परिणाम नहीं है बल्कि उन वन कर्मियों की सतत मेहनत का भी नतीजा है, जो कैमरा ट्रैप की निगरानी करते हैं, जंगल में गश्त करते हैं, संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखते हैं और शिकारियों के खिलाफ कार्यवाई करते हैं। गुजरात में एशियाई शेरों की सुरक्षा का सवाल हो, असम में एक सींग वाले गैंडों का संरक्षण हो या दक्षिण भारत के हाथी गलियारों की निगरानी करनी हो, हर जगह वन रेंजर सबसे महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं।

बढ़े हैं नए दायित्व: हाल के कुछ सालों में वन रेंजरों का कार्यक्षेत्र और भी ज्यादा व्यापक हुआ है। जलवायु परिवर्तन के कारण पूरी दुनिया के जंगलों में लगने वाली आग की घटनाएं बढ़ रही हैं, वर्षा के पैटर्न बदल रहे हैं और मानव-वन्यजीव संघर्ष के मामले भी बढ़े हैं। ऐसे में वन रेंजर अब केवल वन्यजीवों के संरक्षक भर नहीं हैं बल्कि पर्यावरणीय आपदाओं से निपटने वाले अग्रिम प्रहरी भी बन गए हैं। वे जंगलों की स्थिति का आंकलन करते हैं, जलस्रोतों की निगरानी करते हैं और स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर संरक्षण योजनाओं को लागू करते हैं। तकनीक ने इनके काम को नई दिशा दी है। आज कैमरा ट्रैप, ड्रोन, जीपीएस आधारित स्मार्ट पेट्रोलिंग, रेडियो कॉलर, सैटेलाइट मैपिंग और एआई जैसे उपकरण वन्यजीव संरक्षण में मदद कर रहे हैं। मगर ये सारी तकनीक सिर्फ सहायक हैं। अंतिम निर्णय और जोखिम उठाने का साहस केवल और केवल वन रक्षकों का ही होता है। इसलिए आज भी मौके पर त्वरित कार्यवाई वन रेंजरों की सूझबूझ और अनुभव के जरिए ही होती है।

रिस्क भी है बहुत: फॉरेस्ट रेंजर्स का काम जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही जोखिम भरा भी है। कई बार उन्हें हथियाबंद शिकारियों और वन माफिया का भी सामना करना पड़ता है। दूसरी तरफ जंगली हाथी, बाघ, तेंदुए या भालू जैसे वन्यजीवों से अचानक सामना भी जानलेवा हो सकता है। जंगल की आग, बाढ़, भू-स्खलन और विषैले जीव-जंतु भी उनकी राह में कई तरह के जानलेवा रोड़े अटकाते हैं। यह अकारण नहीं है कि दुनिया में हर वर्ष बड़ी संख्या में वन रेंजर ड्यूटी के वक्त अपनी जान गंवा देते हैं। विश्व रेंजर दिवस वास्तव में ऐसे ही बहादुर वन रक्षकों को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है। *

एक्टिंग की दुनिया में विक्रांत मेसी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। टीवी से शुरू हुआ विक्रांत का सफर फिल्म और वेब सीरीज तक पहुंच चुका है। हर किरदार में कुछ नया तलाशने वाले विक्रांत इन दिनों नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' को लेकर चर्चा में हैं। यहां प्रस्तुत है इस वेब सीरीज और एक्टिंग करियर पर विक्रांत मेसी से हुई बातचीत के प्रमुख अंश।

लवस्टोरी बेस्ड बहुत दिलचस्प वेब सीरीज है 'मुसाफिर कैफे': विक्रांत मेसी

खास मुलाकात / आरती सक्सेना

विक्रांत मेसी ने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत टीवी से की थी। उसके बाद विक्रांत ने फिल्मों में काम शुरू किया। उनको फिल्म '12वीं फेल' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कई वेब सीरीज में भी विक्रांत मेसी ने अलग-अलग तरह का अभिनय करके दर्शकों के बीच अपनी खास पहचान बनाई। 24 जुलाई को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' में विक्रांत मेसी रोमांटिक अंदाज में नजर आ रहे हैं। साथ ही विक्रांत इस सीरीज के को-प्रोड्यूसर भी हैं। 'मुसाफिर कैफे' में उनका काम करने का अनुभव कैसा रहा? इसके अलावा अपने एक्टिंग करियर से जुड़े कई दिलचस्प सवालों के जवाब दिए विक्रांत मेसी ने।

रोमांटिक वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' में आप एक्टर होने के साथ-साथ को-प्रोड्यूसर भी हैं। इस वेब सीरीज को प्रोड्यूस करने और इसमें अभिनय करने का खयाल आपके मन में कैसे आया?

एक एक्टर की हमेशा ख्वाहिश होती है कि उसे अच्छी कहानी पर काम करने का या अभिनय करने का मौका मिले। मेरी भी हमेशा कोशिश रहती है कि मैं जो भी काम करूं या जो भी किरदार निभाऊं, उसमें मुझे कुछ अलग कुछ नया करने का मौका मिले। ऐसे में जब मुझे 'मुसाफिर कैफे' वेब सीरीज का ऑफर आया तो मुझे इसकी कहानी अच्छी लगी, लिहाजा मैंने इस वेब सीरीज में एक्टिंग करने के साथ-साथ बतौर सह निर्माता भी नई शुरुआत की। चूंकि यह सीरीज नेटफ्लिक्स की है और मैं नेटफ्लिक्स के साथ पहले भी काफी काम कर चुका हूं, इसलिए मुझे लगा कि मैं 'मुसाफिर कैफे' प्रोड्यूस भी करूं। यह लवस्टोरी पर बेस्ड बहुत ही दिलचस्प सीरीज है, जिसमें पहाड़ों में रोमांस दिखाया गया है।

'मुसाफिर कैफे' के एक सीन में को-एक्ट्रेस के साथ विक्रांत मेसी

'मुसाफिर कैफे' में रोमांस को दो तरीके से दिखाया गया है, जिसमें एक तरफ जवानी की शुरुआत के दौरान का प्यार है, जो हमें प्यार करना सिखाता है और दूसरी तरफ एक ऐसा भी प्यार है, जो सच्चे प्यार की अहमियत समझाता है। इन दोनों में से कौन-सा प्यार आपको आकर्षित करता है?

मेरे खयाल में अगर जिंदगी का तजुर्बा हासिल करना है तो दोनों प्यार का अनुभव पाना जरूरी है। एक बार प्यार में दिल टूटने के बावजूद अगर आपको दूसरा प्यार मिल जाता है तो इसके बाद आपको सच्चे प्यार की परख होती है। और यह फर्क तभी पता चलता है, जब आप दोनों प्यार की अच्छाई-बुराई का अनुभव करते हैं। जवानी में होने वाला प्यार आपको खुशी देता है, तो एक उम्र के बाद मैच्योरिटी में मिला प्यार आपको सुकून देता है। यही इस सीरीज में दिखाया गया है। इस सीरीज की कहानी दिव्य प्रकाश दुबे की नॉवेल पर बेस्ड है।

इस सीरीज में एक्टिंग के साथ-साथ को-प्रोड्यूसर की जिम्मेदारी संभालना आपके लिए कितना मुश्किल या कितना आसान रहा?

सच कहूं तो मुझे तकनीकी पक्ष की ज्यादा जानकारी नहीं है। लेकिन शरण्या राजगोपाल जैसी सक्षम लेखिका और टेरीबली टिनी टेल्स जैसे बेहतरीन प्रोडक्शन पार्टनर की वजह से बतौर निर्माता मेरे लिए काम करना आसान हो गया। इनके साथ काम करने के बाद मुझे प्रोडक्शन या तकनीकी पहलुओं पर ध्यान देने की जरूरत नहीं पड़ी। अगर दमदार कहानी हो, अच्छी स्क्रिप्ट और पूरी तैयारी हो तो आपको सेट पर जाकर काम करना आसान हो जाता है।

आपने छोटे पर्दे यानी टीवी से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत करके बड़े पर्दे पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। '12वीं फेल' के लिए तो आपको राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। अपने इस सफर को आप कैसे देखते हैं?

राष्ट्रीय पुरस्कार पाना एक कलाकार के लिए बहुत बड़े सम्मान की बात होती है। जब मुझे पता चला कि मुझे '12वीं फेल' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। बाकी जहां तक टीवी से फिल्म और फिल्म से वेब सीरीज तक अभिनय सफर की बात है तो वह मुश्किल भी रहा और मजेदार भी, क्योंकि आपको जब कड़ी मेहनत करने के बाद सफलता का मजा चखने का मौका मिलता है तो एक अंदरूनी खुशी होती है। जिसे बयां नहीं किया जा सकता है।

काम के प्रति आपका उत्साह, आपकी लगन और ऊर्जा आज भी बरकरार है। आपके प्रेरणा स्रोत कौन हैं?

एक एक्टर कभी भी अपने काम से संतुष्ट नहीं होता और उसे ऐसा लगता है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है। यही जुनून उस एक्टर के लिए प्रेरणा स्रोत होता है। जब मुझे राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तो कई लोगों ने मुझे यही सवाल किया, 'आपका लक्ष्य तो पूरा हो गया, क्या आगे भी आप ऐसे ही काम के प्रति प्रोत्साहित रहेंगे?' ऐसे में मेरा यही मानना है पुरस्कार या सम्मान यात्रा के पड़ाव हैं। असली लक्ष्य है, अच्छी कहानी के जरिए आम लोगों के बीच सच में बदलाव करना। *